हरिभूमि

झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि

रोहतक, रविवार, अप्रैल 28, 2024

9 प्रशिक्षण लेने वाले 240 शिक्षकों को प्रमाण पत्र देकर ...

10 यूपीएससी रैंकर उदित को किया सम्मानित

खबर संक्षेप

करंट की चपेट में आने से किसान की मौत

झज्जर। क्षेत्र के गांव गौधड़ी के खेतों में कार्य करते समय बिजली करंट की चपेट में आने से एक किसान की मौत हो गई। मृतक की पहचान गौधड़ी गांव निवासी करीब 37 वर्षीय पंकज बेनीवाल पुत्र धर्मबीर के तौर पर हुई है। मामले के जांच अधिकारी अशोक कुमार ने बताया कि पंकज अपने खेतों में पानी देने के कार्य से गया था। जब वह देर तक वापिस नहीं लौटा तो परिजन उसकी तलाश में खेतों में गए। जहां देखा कि पंकज खेत में बेसुध पड़ा है। परिजन पंकज को उपचार के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

हाईड्रा ने मारी टैक्टर को टक्कर, श्रमिक की मौत

झज्जर। झज्जर-गुरूग्राम मार्ग पर गांव याकूबपुर क्षेत्र में हाईड्रा व ट्रैक्टर की टक्कर में एक मजदूर की मौत हो गई। पुलिस को दी शिकायत में मेवात जिले के साटावाड़ी गांव निवासी शारुख खान ने बताया कि याकूबपुर क्षेत्र की कंपनी में चालक के पद पर कार्यरत है। बीती 26 अप्रैल की रात करीब साढे.सात बजे जब वह ट्रैक्टर पर लेबर का कार्य करने वाले बिहार के कचना महेंद्रपुर निवासी मौहम्मद वसीम व वीरपुर लोखरा निवासी राजकुमार चौधरी को लेकर लेबर रूम पर जा रहा था तो बीच रास्ते उनके ट्रैक्टर को तेज गति से आ रही हाईड्रा ने टक्कर मार दी।

पुत्रवधू पर मारपीट करने का आरोप

झज्जर : याकूबपुर गांव में एक महिला ने अपनी पुत्रवधू पर मारपीट करने का आरोप लगाया है। पुलिस को दी शिकायत में ओमपति पत्नी घासीराम ने बताया कि वह बीती 26 अप्रैल को जब परिवार के एक शादी समारोह से कन्यादान करके लौट रही थी तो रास्ते में उसकी पुत्रवधू ने डंडों से उसकी पिटाई गई। इस दौरान जब उसका पति बीच-बचाव करने लगा तो उसके हाथ पर भी डंडे से प्रहार किया गया।

उद्योगों द्वारा किए गए निर्यात के आंकड़े जुटा रहा विभाग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

- एमएसएमई विभाग ने स्थानीय उद्यमियों को पत्र लिखकर वर्ष 2023-24 के दौरान हुए निर्यात से संबंधित जानकारी मांगी

भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहलाने वाला सूक्ष्म-लघु एवं मध्यम उपक्रम अब निर्यात के मामले में भी नित तरक्की कर रहा है। हालांकि इसे रफ्तार देने की आवश्यकता है। आज वैश्विक वस्तु निर्यात में भारत दो प्रतिशत का हिस्सेदार है। आंकड़ों के हिसाब से देखें तो भारतीय निर्यात में एमएसएमई की हिस्सेदारी महज 6 फीसदी है। अर्थात एक प्रतिशत से भी कम एमएसएमई निर्यात से जुड़े हैं। बहरहाल एमएसएमई विभाग ने अब स्थानीय उद्यमियों को पत्र लिखकर वर्ष 2023-24 के दौरान हुए निर्यात से संबंधित जानकारी निर्धारित फॉर्मेट में मांगी है।

हरियाणा की औद्योगिक नगरी बहादुरगढ़ की बात करें तो यहां बड़ी तादाद में एमएसएमई हैं। इन उद्योगों में अधिक श्रम लगता है और निवेश की आवश्यकता कम होती है। हालांकि उनके सामने कई चुनौतियां हैं। आगे बढ़ने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ रहा है। छोटे पैमाने पर काम करने के कारण निर्यात की उनकी क्षमता भी सीमित है। छोटे उपक्रम के लिए विदेशी बाजार में जगह बनाना मुश्किल है। यही कारण है कि अधिकांश निर्यातक बड़ी कंपनियां हैं। दरअसल, देश के सकल घरेलू उत्पाद में एमएसएमई का 27 फीसदी योगदान है। जबकि इस क्षेत्र से करीब 11 करोड़ लोगों को रोजगार उपलब्ध हुआ है। एमएसएमई अपने काम को बेहतर तरीके से करने पर ध्यान दे रही हैं। ई-कॉमर्स प्लेटफार्म के विकास के साथ ही अब एमएसएमई भी विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा में तरक्की कर सकती है।

बहादुरगढ़। एचएसआईआईडीसी द्वारा विकसित औद्योगिक सेक्टर।

यह जानकारी मांगी गई

एमएसएमई की सह-निदेशक ने सभी निर्यातक इकाइयों को 23 अप्रैल को पत्र लिखा है। इसमें यूनिट वाइज और आइटम वाइज निर्यात के आंकड़े मांगे गए हैं। फॉर्मेट में यूनिट का नाम, प्रमोटर का नाम, संपर्क सूत्र, आईटम की जानकारी, देश का नाम जहां निर्यात किया गया, निर्यात की राशि, निवेश और टर्नओवर आदि की जानकारी मांगी गई है।

सही दिशा में आगे बढ़े

फिलहाल एमएसएमई का भारत का घरेलू बाजार वैश्विक बाजार के केवल दो फीसदी के बराबर है। दुनिया में अपनी सही जगह हासिल करने के लिए हमें वैश्विक व्यापार में कम से कम 10 फीसदी हिस्सेदारी का लक्ष्य रखना चाहिए। पुरानी व्यवस्थाएं एमएसएमई पर अनावश्यक बोझ डालती हैं। हमें निर्यात के वित्तीय नियमन के नियम कायदों को सुसंगत बनाना होगा।

- प्रवीण गर्ग, अध्यक्ष, कॉन्फेडरेशन ऑफ बहादुरगढ़ इंडस्ट्रीज

सही आंकड़े एकत्र करना जरूरी

सरकार ने डिस्ट्रिक्ट एक्सपोर्ट हब इनिशिएटिव के तहत निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। जिलों में निर्यात क्षमता वाले उत्पादों और सेवाओं की पहचान की जा रही है। राज्य निर्यात संवर्धन समिति (एसईपीसी) और जिला निर्यात संवर्धन समिति (डीईपीसी) का गठन किया गया है। एमएसएमई क्षेत्र को लाभ पहुंचाने के लिए सही आंकड़े एकत्र करना बेहद जरूरी है।

- नीलिमा, सह-निदेशक, सूक्ष्म-लघु एवं मध्यम उपक्रम विभाग

युवक को बुरी तरह से पीटा, बाइक भी ले भागे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

- सिटी थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू की

शहर पुलिस थाने से कुछ दूरी पर युवाओं के दो पक्षों में झगड़ा हो गया। इस झगड़े में एक युवक को काफी चोट आई। घायल ने कुछ युवकों पर मारपीट करने, हथियार दिखाने, धमकी देने और बाइक छीनकर ले जाने का आरोप लगाया है। शिकायत के आधार पर सिटी थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

मामला झज्जर मोड़ स्थित एक एजुकेशन इंस्टीट्यूट के बाहर का है। पुलिस को दी शिकायत में मोहित ने कहा है कि वह झज्जर मोड़ के निकट स्थित एक सेंटर में कोचिंग ले रहा है। शुक्रवार की दोपहर करीब साढ़े 12 बजे छुट्टी हुई तो सेंटर से बाहर निकला। इसी दौरान जसोरखेड़ी का निवासी मेरा दोस्त मेरी बाइक लेकर कहीं चला गया।

काफी देर इंतजार करने के बाद जब उसके पास कॉल की तो वह गुमराह करने लगा। फिर इसी दौरान मेरे दोस्त ने अपने साथ मौजूद एक युवक से फोन पर बात कराई। वह युवक मुझसे गाली गलोच करने लगा। इसके कुछ देर बाद मेरी बाइक पर चार युवक वहां आए और आते ही मेरे साथ मारपीट शुरू कर दी। मैंने अपने भाई को बुलाया तो कुछ ही देर में उन हमलावरों के दर्जनभर साथी आ गए।

फिर दोबारा से मेरे साथ मारपीट की और हथियार दिखाकर धमकी दी गई। भाई व अन्य दोस्तों ने बीच बचाव कर मुझे छुड़ाया और अस्पताल में भर्ती कराया। जाते-जाते वे मेरी बाइक भी ले गए। उधर, सूचना पाकर सिटी थाने से पुलिस अस्पताल में पहुंची और घायल के बयान लिए।

आरोप कितने सही हैं, ये जांच का विषय है। झगड़े की असल वजह फिलहाल स्पष्ट नहीं है। मामले में तीन आरोपियों पर नामजद सहित अन्य अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। जांच की जा रही है।

मार्केट में एक मकान की छत पर लगे मोबाइल टावर में लगी आग

गनीमत रही की टावर में आग लगने से अन्य कोई दूसरी हानि नहीं हुई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

- दमकल विभाग की टीम मौके पर पहुंची और आग बुझाई

सेक्टर-6 की मार्केट में एक मकान के ऊपर लगे मोबाइल टावर के केबिन में आग लग गई। कुछ ही मिनट में आग ने पूरे टावर को चपेट में ले लिया। सूचना पाकर दमकल विभाग की टीम मौके पर पहुंची और आग बुझाई गई। मकान मालिक के पास टावर लगाने की एनओसी/परमिशन है या नहीं, ये जांच का विषय है। पुलिस और दमकल विभाग की ओर से मामले में जांच की जाएगी। जांच के बाद ही आगामी कार्रवाई होगी।

शनिवार सुबह करीब पौने दस बजे की यह घटना है। दरअसल, यहां एक भवन की छत पर वर्षों से मोबाइल टावर लगा है। नीचे ग्राउंड फ्लोर पर दुकान, फिर ऊपर मकान है और उसकी छत पर टावर है। सुबह अचानक टावर के केबिन में आग सुलग गई और तारों का जाल घिरा होने के कारण तेजी से फैलने लगी। देखते ही देखते पूरे टावर को आग ने चपेट में ले लिया। मकान व आसपास रह रहे लोग/दुकानदार तुरंत बाहर की तरफ भागे। सूचना पाकर दमकल विभाग की टीम मौके पर पहुंची और आग बुझानी शुरू की। करीब आधे घंटे में आग पर काबू पा लिया गया। गनीमत रही कि टावर में आग लगने से अन्य कोई दूसरी हानि नहीं हुई। दूसरी तरफ इस घटना के बाद लोगों ने सवाल भी खड़े किए हैं। लोगों का कहना है कि रिहायशी क्षेत्र में टावर की अनुमति किसने दी, ये अपने आप में सवाल है। यदि समय पर आग नहीं बुझतीं या कोई चपेट में आ जाता तो इसका जिम्मेदार कौन होता। इसकी जांच की जानी चाहिए। इसके अलावा अन्य जगहों पर लगे टावरों की स्थिति और मंजूरी की भी जांच की जाए। वहीं, दमकल विभाग की ओर से इस संबंध में भवन मालिक से पूछताछ की जाएगी।

बहादुरगढ़। आग बुझाने के लिए मौके पर पहुंची दमकल गाड़ी, सेक्टर-6 की मार्केट के टावर में लगी आग।

जांच की जाएगी

सेक्टर-6 की मार्केट में एक भवन के ऊपर लगे टावर में आग की सूचना मिली थी। तुरंत मौके पर पहुंच गए थे। भवन मालिक से टावर संबंधित दस्तावेज लेकर जांच की जाएगी।

- महेश कुमार, एसएचओ, सेक्टर-6 थाना

शार्ट सर्किट से आग लगने की आशंका

सूचना मिलते ही टीम मौके पर भेज दी गई थी। तुरंत आग पर काबू पा लिया गया। शार्ट सर्किट से आग लगने की आशंका है। एनओसी आदि दस्तावेज चेक करेंगे। उसके बाद नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

- रवींद्र कुमार, दमकल अधिकारी

ट्रेन के आगे कूदकर युवक ने दी जान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

टिकरी बॉर्डर के नजदीक एमआईई क्षेत्र में रेलवे लाइन पर एक युवक ने आत्म हत्या कर ली। मृतक की पहचान करीब 20 वर्षीय अनिल कुमार के रूप में हुई है। मूल रूप से बिहार के पटना जिले से था। पिछले कुछ समय से यहां टिकरी बॉर्डर पर परिवार सहित रह रहा था। मेहनत-मजदूरी करता था। शुक्रवार की देर रात को उसका शव रेलवे लाइन किनारे पाया गया।

सूचना पाकर जीआरपी बहादुरगढ़ मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लिया। इस दौरान कपड़ों में मिले दस्तावेजों के आधार पर उसकी शिनाख्त हो पाई। परिजनों के बयान के बाद पुलिस ने शनिवार को शव का पोस्टमार्टम करा दिया। प्रारंभिक तौर पर सामने आया है कि अनिल ने ट्रेन के आगे छलांग लगाकर आत्म हत्या की है। बताते हैं कि पिछले कुछ समय से अनिल की अपनी पत्नी के साथ अनबन चल रही थी। शुक्रवार को भी दोनों में विवाद हुआ था। जिसके बाद रात को ही अनिल घर से निकल गया और संभवतः उसने आत्महत्या कर ली। अनिल एक बच्चे का पिता था। जांच अधिकारी राकेश कुमार का कहना है कि शव परिजनों को सौंप दिया है। मामले में नियमानुसार कार्रवाई की गई है।

चरस सहित पकड़े गए आरोपी पुलिस रिमांड पर

झज्जर। एंटी नारकोटिक्स सैल टीम द्वारा मादक पदार्थ चरस सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। एंटी नारकोटिक्स सैल प्रभारी रविंद्र कुमार ने बताया कि जहाजगढ़ रोड ट्रेन के पास एक मोटरसाईकिल को रूकवाया गया। मोटरसाईकिल चालक ने पिट्ठू बैग लटका रखा था। आरोपियों की नियमानुसार चैकिंग करने पर उनके कब्जे से मादक पदार्थ चरस बरामद किया गया। जिसका वजन करने पर एक किलो 935 ग्राम पाया गया। आरोपियों की पहचान संजय और जलालुद्दीन के तौर पर की गई है। आरोपियों के खिलाफ नियमानुसार मामला दर्ज करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से आरोपियों को तीन दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

खेल-खेल में बच्ची की दर्दनाक मौत

हरिभूमि न्यूज. बहादुरगढ़

- संदिग्ध परिस्थितियों में फंदे पर लटक गई

खेल-खेल में एक मासूम बच्ची हादसे का शिकार हो गई। संदिग्ध परिस्थितियों में वह फंदे पर लटक गई। जब तक परिजनों की नजर पड़ती, देर हो चुकी थी। पुलिस ने पोस्टमार्टम करा शव परिजनों को सौंप दिया है। मामले में 174 के तहत कार्रवाई की गई है। मामला गांव छारा स्थित एक ईंट भट्ठे का है।

दरअसल, प्रवासी मूल के कुछ परिवार यहां भट्ठे पर काम करते हैं और यहीं पर रहते हैं। एक दंपति शुक्रवार की सुबह अपने काम में लगा हुआ था। पीछे से उनके चारों बच्चे झुग्गी में खेल रहे थे। झुग्गी में एक पालना (झूला) बना है। खेल-खेल में सात वर्षीय बच्ची की गर्दन पालने की रस्सी में उलझ गई। इस तरह से मासूम की तड़प-तड़प कर जान चली गई। कुछ समय जब परिवार के लोग वहां आए तो नजर पड़ी। आनन-फानन में अस्पताल लेकर गए, जहां चिकित्सकों ने मौत की पुष्टि कर दी। सूचना पाकर मांडोठी चौकी से पुलिस अस्पताल में पहुंची और पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू कराई। दुर्घटनावश जान गंवाने वाली बच्ची चार भाई-बहनों में सबसे बड़ी थी।

गर्मी और लू से बचने के लिए प्रशासन ने जारी की एडवाइजरी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

आमजन के साथ-साथ पशुधन को भी हीट-वेव से बचाना जरूरी है। नागरिक गर्मी के प्रकोप से बचने के लिए स्वास्थ्य विभाग की सलाह के अनुरूप जरूरी उपाय अपनाएं और खासकर बच्चों का विशेष ख्याल रखें। डीसी कैप्टन शक्ति सिंह ने बताया कि राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग की ओर से जारी की गई एडवाइजरी के अनुसार गर्मी व लू से बचने के लिए नागरिक दोपहर के समय विशेषकर बारह से तीन बजे के बीच बाहर जाने से बचें। नागरिकों के साथ ही पशुधन को भी गर्मी से बचाव करना है। उन्होंने कहा कि आमजन के साथ-साथ पशुओं के पीने के पानी के लिए ट्यूबवेल आदि का भी प्रबंध किया जाए। मवेशियों की सुरक्षा के लिए हीटवेव एक्शन प्लान तैयार करें। गर्मी की स्थितियों के दौरान पशुओं में आने वाली बीमारियों के लक्षण व उससे बचाव के बारे में लोगों को जागरूक करें।

धूप में सावधानी बरतने की सलाह

बहादुरगढ़। तेज धूप व गर्मी में थोड़ी सी लापरवाही सेहत पर असर डाल सकती है। लिहाजा खानपान सहित धूप में निकलते समय विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है। चिकित्सकों के अनुसार धूप में अधिक समय तक खाली पेट रहना नुकसानदायक हो सकता है। इसलिए जब भी बाहर निकले सिर को ढक कर रखें, साथ ही बार-बार पानी भी पीते रहें। डॉ. सुखपाल ने धूप में निकलने से पहले कुछ सावधानी बरतने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि बाहर निकलने पर सिर को कपड़े से ढक कर रखना चाहिए। बार बार अधिक मात्रा में पानी पीयें। साथ ही तेज धूप में अधिक समय तक खाली पेट रहने एवं बासी भोजन करने से बचें। उल्टी-दस्त की शिकायत होने पर तत्काल ओआरएस का घोल पिलाते हुए पीड़ित को नजदीकी अस्पताल में इलाज करवाएं।

सफलता | सीनियर फेडरेशन कुश्ती कप में बहादुरगढ़ इलाके के पहलवान छाए

वाराणसी से मेडल जीतकर लौटे म्हारे पहलवान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

वाराणसी में हुए सीनियर फेडरेशन कुश्ती कप में बहादुरगढ़ इलाके के पहलवान छाए रहे। शानदार प्रदर्शन करे हुए यहां के छह पहलवानों ने अपने-अपने भारवर्ग में पदक जीते। इनकी जीत पर परिजनों और साथी पहलवानों में खुशी की लहर दौड़ गई। भारतीय कुश्ती संघ की ओर से 23 से 26 अप्रैल तक यह आयोजन किया गया था। देशभर के पहलवानों ने इसमें दमखम दिखाया। गांव मांडोठी स्थित हिंद केसरी सोनू अखाड़े के तीन पहलवानों ने भी जोर आजमाइश करते हुए जबरदस्त प्रदर्शन किया। साहिल ने 79 केजी फ्री-स्टाइल में गोल्ड मेडल अपने नाम किया। वहीं रोहित ने 57 केजी तथा दीपक ने 67 केजी में ब्रांज मेडल जीते। रोहित और साहिल आसौदा के रहने वाले हैं। अर्जुन अवॉर्डी कोच धर्मेंद्र व अन्य पहलवानों ने इनकी जीत पर खुशी जताई। धर्मेंद्र ने कहा कि तीनों पहलवान बेहद होनहार हैं। वहीं, इस प्रतियोगिता में हवा सिंह अखाड़े के भी तीन पहलवानों ने मेडल जीते। प्रमोद ने 57 केजी में सिलवर, दीपांशु ने 65 केजी में ब्रांज तथा नवीन ने 74 केजी में ब्रांज मेडल अपने नाम किया। इन तीनों का शनिवार को अखाड़े में जोरदार अभिनंदन किया गया। इन्होंने अपनी जीत का श्रेय गुरु हवा सिंह छंगा पहलवान, कोच नवनीत, जिला कुश्ती संघ के महासचिव रामरत्न भूरू पहलवान को दिया। गुरू हवा सिंह सहित तमाम कोचों और खेल प्रेमियों ने तीनों पहलवानों को आशीर्वाद दिया। रणबीर मलिक, पोनी पहलवान, महेंद्र दलाल रजेश दलाल, नरेंद्र आदि इस अवसर पर मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। वाराणसी में पदक जीतने वाले साहिल और रोहित, गुरू, कोच व साथी पहलवानों के साथ पदक विजेता पहलवान। फोटो : हरिभूमि

लूटपाट मामले में एक आरोपी गिरफ्तार

झज्जर : पुलिस की एक टीम द्वारा लूटपाट मामले में कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। शहर थाना प्रभारी सदानंद ने बताया कि सतबीर पुत्र बीरा निवासी बनत जिला शामली उत्तर प्रदेश ने शिकायत देते हुए बताया कि वह झज्जर में किराए पर रहता है और फेरी लगाकर आइसक्रीम बेचता है। बीते 25 अप्रैल सांय आइसक्रीम बेचकर वापस अपने घर जा रहा था तभी गुरूग्राम रोड फ्लाई ओवर के पास दो लड़के मोटरसाईकिल पर आए और मेरे दो हजार रुपये छीन लिए। शिकायत के आधार पर मामला दर्ज करते हुए एक आरोपी को पकड़ा गया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान रोहित निवासी गांव जौंधी जिला झज्जर के तौर पर की गई है। आरोपी के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया।

कांग्रेसी युवराजों पर नायब का जुबानी प्रहार

बहादुरगढ़। रैली में बादली की जनता का अभिवादन स्वीकारते सीएम व अन्य नेता।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

मुख्यमंत्री नायब सैनी ने शनिवार को बादली में आयोजित विजय संकल्प रैली के दौरान कांग्रेस के युवराज राहुल गांधी और दीपेंद्र हुड्डा पर जमकर जुबानी प्रहार किए। ओमप्रकाश धनखड़ के संयोजन में हुई इस रैली में भाजपा नेता राजीव जैन और कैप्टन भूपेंद्र समेत कई वरिष्ठ नेता मंच पर मौजूद रहे।

बादली में हुई रैली में मुख्यमंत्री नायब सैनी ने कहा कि बीते 10 सालों में किसान की खुशहाली के लिए काम हुए हैं। युवाओं को रोजगार दिए और महिलाओं को सशक्त किया।

उन्होंने आलू के आकार पर दिए दीपेंद्र के बयान और राहुल के गरीबी खत्म करने के दावे पर भी चुटकी ली। सांसद डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा कि वे मेट्रो का विस्तार पहला बादली तक और उसके बाद झज्जर तक करवाएंगे।

स्मॉल-कैप म्यूचुअल फंड का दमदार प्रदर्शन, दिया बंपर रिटर्न

रिटेल निवेशकों ने किया कमाल, स्मॉलकैप में लगी रकम 83% बढ़ी ● मार्च में रिकॉर्ड निकासी के बाद भी नहीं घटी निवेशकों की कमाई ● इस साल स्मॉल-कैप म्यूचुअल फंड की संपत्ति 2.43 लाख करोड़ बढ़ी ● मार्च 2024 में फोलियो की संख्या 1.9 करोड़ तक पहुंची ● एक साल पहले 1.09 करोड़ थी, इसमें 81 लाख इजाफा हुआ ● म्यूचुअल फंड में रिटेल निवेशकों की भागीदारी में उछाल

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड का दायरा लगातार बढ़ता जा रहा है। यह निवेशकों को छप्पर फाड़ रिटर्न दे रहा है। स्मॉल-कैप फंड्स ने 1 साल में 70% तक रिटर्न दिया है। इसमें निवेश कर निवेशक मालामाल हो रहे हैं। मार्च में रिकॉर्ड निकासी के बावजूद भी स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड में निवेशकों का क्रेज यानी दिलचस्पी कम नहीं हो रही है। इसका कारण है, इस फंड में लगातार रिटेल निवेशकों की भागेदारी का बढ़ना। जो इस स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड को लोगों के बीच लोकप्रिय बना रहा है और अच्छी कमाई भी करवा रहा है। लगातार रिटेल निवेशकों की भागीदारी में उछाल और बाजार में तेजी से मार्च 2024 के अंत में स्मॉल-कैप म्यूचुअल फंड कैटिगरी की संपत्ति 2.43 लाख करोड़ रुपये तक बढ़ गई। यह सालाना आधार पर 83 प्रतिशत की बढ़ोतरी दिखाता है। संपत्ति में वृद्धि को निवेशकों की संख्या में बढ़ोतरी ने ताकत दी। मार्च 2024 में फोलियो की संख्या 1.9 करोड़ तक पहुंच गई, जो एक साल पहले 1.09 करोड़ थी। इसमें 81 लाख इजाफा हुआ। यह स्मॉल-कैप फंड के प्रति निवेशकों के रुझान को दिखाता है।

निवेशकों को मिल रहे अवसर

बाजार के जानकारों को कहना है कि इस समय भारत की अर्थव्यवस्था लगातार तेजीर से बढ़ रही है। इसलिए निवेशक भी स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड में काफी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। लोग लगातार एसआईपी या लंपसप निवेश कर रहे हैं। भारत की अर्थव्यवस्था का वृद्धि पथ लोगों की बढ़ी हुई रुचि को दिखाता है। इससे कई गैर-सूचीबद्ध स्मॉल-कैप कंपनियां पूंजी बाजार से समर्थन मांग रही हैं। यह प्रवृत्ति दीर्घकालिक विकास संभावनाओं पर नजर रखने वाले निवेशकों को आशाजनक अवसर प्रदान करती हैं। हालांकि आम चुनाव, मॉनसून पूर्वानुमान, आर्थिक गतिविधि, इंफ्लेशन, जीडीपी अनुमान और वित्त वर्ष 2024-25 की आय वृद्धि जैसे फैक्टर स्मॉल-कैप कंपनी के वैल्यूएशन को प्रभावित कर सकते हैं और इस कैटिगरी में अस्थिरता ला सकते हैं। हालांकि इस सबके बावजूद स्मॉल-कैप कंपनियां ग्रोथा हासिल करने में सक्षम होंगी। इसमें निवेश अभी फायदे का सौदा हो सकता है। हालांकि एक्सपर्ट्स साफ कहते हैं कि थोड़ा रिस्क लेने की क्षमता रखने वाले लोगों को ही इनमें निवेश करना चाहिए।

40,188 करोड़ का इनफ्लो

वित्त वर्ष 2023-24 में स्मॉल-कैप फंड में 40,188 करोड़ रुपये का इनफ्लो देखा गया, जो पिछले वित्त वर्ष में दर्ज 22,103 करोड़ रुपये से कहीं अधिक है। हालांकि मार्च के महीने में स्मॉल-कैप फंड में दो साल में पहली बार 94 करोड़ रुपये की शुद्ध बिकवाली भी देखी गई। असोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों के अनुसार, स्मॉल-कैप म्यूचुअल फंड की एयूएम मार्च 2023 के अंत में 2.43 लाख करोड़ रुपये और मार्च 2022 में 1.33 लाख करोड़ रुपये थी।

क्या है वजह

शेयर बाजार में निवेशकों का पैसा बढ़ा है। इसके चलते इक्विटी रूट के जरिए निवेशकों का पैसा आ रहा है और बाजार में स्मॉलकैप और मिडकैप शेयरों में अच्छा रिटर्न मिल रहा है। इसके चलते स्मॉलकैप और मिडकैप म्यूचुअल फंड में भी इंवेस्टमेंट बढ़ रहा है।

बढ़ रही रिटेल निवेशकों की दिलचस्पी

म्यूचुअल फंड में रिटेल निवेशकों की बढ़ती दिलचस्पी के कारण पिछले पांच साल में फोलियो की संख्या दोगुनी हो गई है। रिसर्च फर्म आईसीआरए के अनुसार मार्च 2024 तक म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो की कुल संख्या 17.79 लाख करोड़ हो गई। मार्च 2020 में इसकी संख्या 8.97 लाख करोड़ थी। आईसीआरए एनालिटिक्स ने कहा कि रिटेल निवेशक म्यूचुअल फंड के जरिये इक्विटी और बॉन्ड में निवेश करने में अधिक रुचि दिखा रहे हैं। फोलियो की लिस्ट में इक्विटी ओरिएंटेड फंड 68.7%, ईटीएफ 11.7% और हाइब्रिड स्कीम में 7.7% हिस्सेदारी है। मार्च 2024 तक इसके एयूएम पिछले पांच वर्षों में दोगुनी से अधिक होकर 53.40 लाख करोड़ रुपये हो गई है। मार्च 2020 में यह 22.26 लाख करोड़ रुपये थी।

क्या हैं स्मॉल-कैप फंड

स्मॉल-कैप म्यूचुअल वे फंड होते हैं, जो छोटी कंपनियों में निवेश करते हैं। यानी ऐसी कंपनियां जिनके शेयरों की वैल्यू काफी कम है। इन्हें हम स्मॉलकैप कंपनियां कहते हैं। हालांकि, शेयर बाजार में लिस्टेड ऐसी कंपनियों के कारोबार में बेहतर ग्रोथ की संभावनाओं का आकलन करने के बाद ही इनकी पहचान की जाती है। मार्केट कैप के लिहाज से शेयर बाजार की शीर्ष 250 कंपनियों को छोड़कर बाकी में स्मॉल-कैप म्यूचुअल फंड निवेश करते हैं। स्मॉल-कैप म्यूचुअल फंड अपने निवेश की रकम का 65% तक छोटी कंपनियों में लगाते हैं। इसके बाद बची 35% रकम को फंड मैनेजर मिड या लार्ज कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं।

एसआईपी के जरिए निवेश सही

म्यूचुअल फंड में एक साथ पैसा लगाने के बजाए सिस्टमेंटिक इनवेस्टमेंट प्लान यानी एसआईपी के जरिए निवेश करना चाहिए। एसआईपी के जरिए आप हर महीने एक निश्चित अमाउंट इसमें लगाते हैं। इससे रिस्क और कम हो जाता है क्योंकि इससे इस पर बाजार के उतार चढ़ाव का ज्यादा असर नहीं पड़ता। इसलिए एसआईपी के जरीये निवेश बेहतर है।

लम्बे समय के लिए निवेश फायदेमंद

कम समय में ज्यादा रिटर्न के लिए स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड स्कीम्स का रुख न करें। इसमें आपका नुकसान होना तय है। अगर आपकी लंबे समय तक निवेश की योजना है और जोखिम लेने की क्षमता हो तभी इन स्कीम्स का रुख करें। इनमें ज्यादा जोखिमछोटे कैप स्टॉक जोखिमपूर्ण होते हैं, क्योंकि उनमें कम कारोबार होता है। उदाहरण के लिए, एक कंपनी के पास एक अनूठी सेवा/उत्पाद हो सकता है, लेकिन इसके लिए पर्याप्त वित्त नहीं हो सकता है। तो, कभी-कभी धन की कमी एक बिजनेस को विफल कर देती है। लार्ज कैप शेयरों की तुलना में छोटे कैप स्टॉक ज्यादा अस्थिर होते हैं। एक्सपर्ट्स के अनुसार इसमें एसआईपी के जरिए निवेश करना ज्यादा सही रहता है।

लार्ज-कैप पर बढ़ रहा निवेशकों का भरोसा!

- बड़ी कंपनियों के शेयरों और ईटीएफ में लगातार बढ़ रहा निवेश
- सेबी के 'स्ट्रेस टेस्ट' के नतीजे भी निवेशकों को प्रभावित कर रहे
- सेबी के स्मॉल-कैप के मूल्यांकन पर लगाम लगाने के प्रयासों का असर मार्च 2024 में दिखा, निवेश कम हुआ

बचत
बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार नियामक सेबी के छोटे शेयरों वाली स्कीम (स्मॉल-कैप) के अत्यधिक मूल्यांकन पर लगाम लगाने के प्रयासों का असर निवेशकों पर दिखने लगा है। अब निवेशकों का रुझान लार्ज-कैप की और बढ़ने लगा है। अगस्त 2021 के बाद पहली बार, मार्च 2024 में स्मॉल-कैप स्कीम में निवेश कम हुआ है। एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले 15 महीनों में लगातार हर महीने औसतन 3300 करोड़ रुपये के निवेश के बाद, मार्च में इन स्कीम से 94 करोड़ रुपये की कुल निकासी देखने को मिली। हालांकि इसके बावजूद भी इन स्कीमों में निवेश हो रहा है। सेबी द्वारा कराए गए 'स्ट्रेस टेस्ट' के नतीजे भी निवेशकों के सेंटीमेंट को प्रभावित कर रहे हैं। इन परीक्षणों में यह पता लगाया गया कि स्मॉल और मिड-कैप फंडों को अपने पोर्टफोलियो का कितना हिस्सा जल्दी बेचना पड़ सकता है। सेबी के आदेश के अनुसार, म्यूचुअल फंड कंपनियों को हर महीने 15 तारीख को मिड-कैप और स्मॉल-कैप स्कीम के लिए तरलता, अस्थिरता, मूल्यांकन और पोर्टफोलियो कारोबार से जुड़े आंकड़ों को सार्वजनिक करना होता है।

पिछले साल मचाई धूम

वर्ष 2023 में छोटी और मझोली कंपनियों के शेयरों (मिड और स्मॉल-कैप) ने तो धूम मचा दी थी। निवेशकों ने इनमें 64,000 करोड़ रुपये से भी ज्यादा का निवेश किया। लेकिन बाजार नियामक सेबी को ये चिंता सता रही थी कि क्या जरूरत पड़ने पर ये फंड आसानी से अपने शेयर बेच पाएंगे?

लार्ज-कैप व ईटीएफ पर ध्यान

स्मॉल-कैप फंडों में निवेश कम होने के साथ ही बड़ी कंपनियों के शेयरों (लार्ज-कैप) वाले फंडों की तरफ निवेशकों का रुझान बढ़ रहा है। मार्च 2024 में लार्ज-कैप फंडों में 2,130 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश आया, जो पिछले 21 महीनों में सबसे ज्यादा है। गौर करने वाली बात यह है कि पहले हर महीने औसतन 115 करोड़ रुपये का निवेश बाहर निकलता था, जबकि अब इसके उल्टा हो गया है। दिलचस्प है कि मार्च 2024 में स्मॉल-कैप में जाने वाले निवेश का लगभग 70% अब लार्ज-कैप की ओर रुख कर गया है। सिर्फ इतना ही नहीं, एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) में भी निवेश बढ़ रहा है। मार्च 2024 में ईटीएफ में निवेश 10,500 करोड़ रुपये की नई ऊंचाई पर पहुंच गया, जबकि इसके पहले औसतन हर महीने 2,500 करोड़ रुपये का ही निवेश होता था। कुल मिलाकर, निवेशकों की पसंद बदल रही है। वे अब छोटी और मझोली कंपनियों के फंडों के बजाय बड़ी कंपनियों और ईटीएफ जैसे विकल्पों को तरजीह दे रहे हैं।

रिपोर्ट में यह भी दावा

रिपोर्ट में कहा गया है, म्यूचुअल फंड में कुल मिलाकर तो पैसा आ ही रहा है, लेकिन निवेशकों की पसंद बदल रही है। पहले जहां उनका रुझान छोटी और मझोली कंपनियों (स्मॉल और मिड-कैप) वाले फंडों की तरफ था, वहीं अब वो बड़ी कंपनियों (लार्ज-कैप) और एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) जैसे विकल्पों को तरजीह दे रहे हैं। ये बदलाव फंड मैनेजमेंट कंपनियों (एएमसी) के लेवल पर भी दिख रहा है। कुछ एएमसी में स्मॉल और मिड-कैप फंडों से पैसा निकल रहा है, जबकि कुछ में बड़े पैमाने पर पैसा जमा हो रहा है।

बदल रही पसंद

- रिपोर्ट के मुताबिक, इस बदलाव की एक वजह ये भी हो सकती है कि स्मॉल-कैप फंडों ने मिड-कैप फंडों के मुकाबले कम रिटर्न दिया है, जिससे निवेशक अब ज्यादा जोखिम नहीं लेना चाहते।
- अलग-अलग फंडों की बात करें तो लार्ज-कैप फंडों में पैसा जमा करने की रफ्तार पहले कम थी, लेकिन अब बढ़ रही है।
- मिड-कैप फंडों में ये रफ्तार स्थिर थी, लेकिन अब बदलने के संकेत मिल रहे हैं। सबसे ज्यादा चिंता की बात स्मॉल-कैप फंडों को लेकर है। फरवरी 2021 के बाद पहली बार इन फंडों में नए खाते खुलने की संख्या घटी है, जो निवेशकों की घटती दिलचस्पी को दर्शाता है।
- मार्च 2024 में नए लार्ज-कैप फंडों में जबरदस्त उछाल आया है। ये दिसंबर 2021 के बाद से सबसे ज्यादा बढ़ोतरी है। इसके उलट, पिछले दो महीनों में नए मिड-कैप फंडों में गिरावट देखी गई है, हालांकि ये कमी स्मॉल-कैप की तुलना में कम है।
- शायद निवेशक मिड-कैप में अभी भी संभावनाएं देख रहे हैं, लेकिन थोड़ा इंतजार करना चाहते हैं।

यह भी गौर वाली बात

गौर करने वाली बात ये है कि स्मॉल-कैप फंड मैनेजर भी अपनी रणनीति बदल रहे हैं। मार्च में बिकवाली के दौरान उन्हें निवेश के लिए नकदी का इस्तेमाल करने का मौका मिला। साथ ही, वो लगातार लार्ज-कैप शेयरों में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा रहे हैं, जो मार्च 2024 में अब तक के सबसे ऊंचे स्तर 7.5% पर पहुंच गई है। ये कदम संकेत देते हैं कि स्मॉल-कैप फंड मैनेजर जोखिम कम करने की कोशिश कर रहे हैं।

म्युचुअल फंड की कई स्कीमों ने दिया 40% से 71% मुनाफा

रिटर्न देने में स्टॉक मार्केट को भी पीछे छोड़ा, एक साल में दिखे ऐसे कई लार्जकैप म्यूचुअल फंड, एसआईपी के जरिये निवेश कर हो सकते हैं मालामाल,लार्जकैप सेगमेंट में मार्केट कैपिटलाइजेशन के लिहाज से टॉप 100 कंपनियां

मुनाफा
बिजनेस डेस्क

वित्त वर्ष 2024 की बात करें तो बीते करीब 1 साल में ऐसे कई लार्जकैप म्यूचुअल फंड हैं, जिन्होंने रिटर्न देने के मामले में स्टॉक मार्केट को भी पीछे छोड़ दिया है। एक रिपोर्ट पर नजर डालें तो कम से कम 10 लार्जकैप फंड ऐसे दिख रहे हैं, जिनमें 1 साल के दौरान 40 फीसदी से 71 फीसदी तक रिटर्न मिला है। लार्ज-कैप फंड म्यूचुअल फंड की वह कैटेगरी है, जो लार्ज कैपिटलाइजेशन वाली कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं। लार्जकैप म्यूचुअल फंड अलग अलग लार्जकैप स्टॉक के जरिए आपके पोर्टफोलियो को डाइवर्सिफाइड कर देते हैं। लार्जकैप सेगमेंट में आमतौर पर मार्केट कैपिटलाइजेशन के लिहाज से टॉप 100 कंपनियां शामिल हैं। इनमें आरआईएल, टीसीएस, एचयूएल, एसबीआई, आईटीसी, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक जैसे शेयर मुख्यतः शामिल होते हैं।

एक सुरक्षित विकल्प

म्यूचुअल फंड में निवेश, सीधे स्टॉक मार्केट में निवेश की तुलना में एक सुरक्षित विकल्प माना जाता है। वहीं, इन स्कीम में रिटर्न भी हाई है। कई स्कीम तो स्टॉक मार्केट की तरह ही रिटर्न दे रही हैं। इसी के चलते म्यूचुअल फंड निवेश का पॉपुलर विकल्प बन गया है। इक्विटी म्यूचुअल फंड में भी स्टॉक मार्केट की तरह ही अलग-अलग कैटेगरी हैं। मसलन लार्जकैप, मिडकैप या स्मॉलकैप फंड। जो निवेशक सीधे स्टॉक मार्केट में निवेश का रिस्क नहीं लेना चाहते हैं, लेकिन ज्यादा रिटर्न की इच्छा रखते हैं, उनके लिए म्यूचुअल फंड बेहतर विकल्प हो सकते हैं। इक्विटी सेगमेंट में भी लार्जकैप म्यूचुअल फंड ज्यादा सुरक्षित माने जाते हैं। असल में लार्जकैप स्टॉक्स में बाजार का उतार चढ़ाव का अच्छे से सामना करने की क्षमता होती है। इसलिए अक्सर निवेशकों में लार्ज कैप में निवेश करने की ललक दिखाई देती है, जो इन फंडों निवेश के लिए काफी सुगम बनाती है और निवेशकों को ये स्कमी ज्यादा आकर्षित करती है। क्योंकि लार्ज कैप फंड में निवेश काफी कम रिस्की होता है और बढ़िया रिटर्न भी मिलता है।

किसे करना चाहिए निवेश

अगर आप बाजार के उतार चढ़ाव को पसंद नहीं करते या ज्यादा रिस्क लेने की क्षमता नहीं है, फिर भी इक्विटी की तरह ज्यादा रिटर्न चाहते हैं तो लार्ज-कैप फंड आपके लिए परफेक्ट विकल्प है। हालांकि ऐसा नहीं है कि लार्ज-कैप में रिस्क नहीं है या बाजार के वोलैटिलिटी का असर नहीं होता, लेकिन इनमें अस्थिरता मिडकैप और स्मॉलकैप की तुलना में कम होती है। ये मिडकैप और स्मॉलकैप की तुलना में बाजार की अस्थिरता से मजबूती से निपट सकते हैं। असल में लार्जकैप फंड में अलग अलग सेक्टर की अलग अलग ब्लूचिप कंपनियों के स्टॉक होते हैं। इन ब्लूचिप का मार्केट कैप ज्यादा होता है और इनका बेस भी मजबूत होता है। ऐसी कंपनियां कैश रिच होती हैं।

इन्होंने किया कमाल

- आईसीआईसीआई प्रू भारत 22 एफओएफः 71%
- जेएम लार्जकैपः 48%
- निप्पॉन इंडिया लार्जकैप फंडः 47%
- डीएसपी निफ्टी 50 इक्वल वेट इंडेक्सः 45%
- आईसीआईसीआई प्रू ब्लूचिप फंडः 44%
- बड़ौदा बीएनपी परिबा लार्जकैपः 43%
- इन्वेस्को इंडिया लार्जकैपः 43%
- एचडीएफसी टॉप 100: 41%
- बंधन लार्जकैप फंडः 41%
- मिरे एसेट इक्विटी अलोकेटर एफओएफ : 40%

क्या हैं लार्ज कैप फंड

लार्ज-कैप म्यूचुअल फंड इक्विटी फंड होते हैं जो मुख्य रूप से लार्ज-कैप कंपनी स्टॉक में निवेश करते हैं। ये वे प्रतिष्ठित कंपनियां हैं, जिनका संपत्ति बनाने का बेहतरीन रिकॉर्ड है। चूंकि इन कंपनियों की स्थापना पहले ही की जा चुकी है, इसलिए वे मिड और स्मॉल-कैप फंड स्कीम की अपेक्षा कम जोखिम लेकर स्थिर आय जनरेट करते हैं। कम जोखिम और लॉन्ग-टर्म निवेश होरिजोन पसंद करने वाले निवेशकों को लार्ज-कैप म्यूचुअल फंड के बारे में जानना चाहिए। ये योजनाएं रिलायंस, टीसीएस, इन्फोसिस, एचडीएफसी बैंक और अन्य जैसी शीर्ष कंपनियों में पूंजी का एक महत्वपूर्ण भाग (लगभग 80 प्रतिशत) निवेश करती हैं। वे अपने विशिष्ट सेगमेंट में मार्केट लीडर हैं और वे मजबूत मार्केट लीडर हैं।

बढ़िया रिटर्न के लिए सिर्फ इक्विटी में पैसे न लगाए ■ डेट स्कीम को भी अपनाएं और निवेश का फायदा लें ■ निवेश की सही स्ट्रैटेजी क्या होनी चाहिए, रखें ध्यान ■ डेट फंड में एयूएम का 95 फीसदी से अधिक कॉर्पोरेट संस्थाओं से आता है ■ 90 फीसदी से अधिक इक्विटी एयूएम रिटेल और एचएनआई से आता है

डेट फंड को भी कम न आंकें, ये भी दे सकते हैं मोटा मुनाफा

जानकारी
बिजनेस डेस्क

यदि आप भी निवेश की यात्रा शुरू करने जा रहे हैं तो थोड़ा सावधानी के साथ निवेश करें। निवेशक डेट म्यूचुअल फंड को कम न आंके, चूंकि ये फंड भी आपको मोटा मुनाफा करवा सकते हैं और आपके पैसे को बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। इसलिए आपके पोर्टफोलियों में डेट फंड भी होने चाहिएं। म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में अब तक ऐसा ट्रेंड देखने को मिलता आया है कि रिटेल निवेशक प्रमुख रूप से इक्विटी प्रोडक्ट में निवेश करते हैं, जबकि कॉर्पोरेट बड़े पैमाने पर डेट या फिक्स्ड इनकम वाले प्रोडक्ट में निवेश करते हैं। दिसंबर 2023 के एएमएफआई (एएमएफआई) आंकड़ों के अनुसार, डेट म्यूचुअल फंड में एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) का 95 फीसदी से अधिक कॉर्पोरेट संस्थाओं से आता है, जबकि 90 फीसदी से अधिक इक्विटी एयूएम रिटेल और एचएनआई निवेशकों की ओर से आता है। तो क्या आप भी रिटेल निवेशक हैं और सिर्फ इक्विटी स्कीम पर फोकस कर रहे हैं। अगर कर रहे हैं तो क्या यह स्ट्रैटेजी सही है।

निवेश की प्रक्रिया बेहद आसान

म्यूचुअल फंड में निवेश की प्रक्रिया पहले की तुलना में अधिक सरल और व्यवस्थित हो गई है। यहां तक कि लिक्विड फंड और ओवरनाइट फंड में 50,000 रुपये तक की निकासी कुछ ही सेकंड में की जा सकती है। सेविंग्स अकाउंट या लिक्विड और ओवरनाइट म्यूचुअल फंड के बीच रिटर्न के टैक्सेशन की दर में कोई अंतर नहीं है, क्योंकि दोनों मार्जिनल रेट पर टैक्सेबल हैं। ओवरनाइट फंड में भी कोई एक्जिट लोड नहीं होता है।

रिटेल निवेशकों की डेट में भागीदारी कम

सबसे पहले, अगर आप ओवरआल एफडी वॉल्यूम पर विचार करते हैं तो यह म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री से भी आगे निकल जाता है। इसके अलावा, अगर आप ईपीएफओ बैलेंस, पोस्ट ऑफिस की स्मॉल फाइनेंस स्कीम और इस तरह की अन्य विकल्पों को जोड़ते हैं तो यह साफ है कि रिटेल निवेशक फिक्स्ड इनकम वाले विकल्पों में निवेश करने पर ज्यादा विचार करते हैं। वहीं, रिटेल निवेशक वास्तव में डेट म्यूचुअल फंड में हिस्सा नहीं के बराबर लेते हैं। लिक्विड और ओवरनाइट फंड में रिटेल निवेश 55,000 करोड़ रुपये से भी कम है, जबकि इनकी तुलना में देश में करंट अकाउंट और सेविंग्स अकाउंट में 23 लाख करोड़ रुपये जमा हैं।

क्यों हैं डेट को लेकर कम आकर्षण

डेट फंड में रिटेल निवेशकों के बीच कम आकर्षण की एक वजह इसे लेकर जानकारी की कमी है। कई वित्तीय सलाहकार भी इन प्रोडक्ट पर कम मार्जिन के चलते ध्यान नहीं देते हैं। वहीं दूसरी ओर, कन्जर्वेटिव निवेशकों के लिए बैंक ब्रॉन्च या रिलेशनशिप मैनेजर की व्यक्तिगत सुविधा बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। क्योंकि खासतौर से वरिष्ठ नागरिकों के लिए, किसी बैंक ब्रॉन्च में जाकर ब्रॉन्च मैनेजर के साथ बातचीत करके निवेश की सलाह लेना आसान होता है।

डेट फंड में कई फायदे

दूसरा, एक कैटेगरी के रूप में, डेट म्यूचुअल फंड निवेशकों को कई तरह के महत्वपूर्ण बेनेफिट प्रदान करते हैं, चाहे वे रिटेल निवेशक हों या कॉर्पोरेट। आज, रिटेल निवेशक आमतौर पर अपना पैसा सेविंग्स अकाउंट में रखते हैं, जिस पर सालाना 3-4 फीसदी के बीच में आय होती है। हालांकि, म्यूचुअल फंड निवेश के लिए कई तरह के विकल्प पेश करते हैं, जिनमें निवेशकों को बेहतर रिटर्न देने की क्षमता होती है। ये 6 से 6.5 फीसदी या इससे भी ज्यादा सालाना रिटर्न दे सकते हैं। तुरंत लिक्विडिटी के उद्देश्य के लिए ओवरनाइट फंड हैं। वहीं लिक्विड फंड ऐसी स्कीम है, जिसकी मैच्योरिटी 3 महीने की होती है। मनी मार्केट फंड हैं जो आपको 12 महीने के लिए पैसा निवेश करने में मदद करते हैं।

कॉरपोरेट्स और ट्रेजरी

इन प्रोडक्ट का उपयोग कॉरपोरेट्स और ट्रेजरी द्वारा अपने सरप्लस फंड को निवेश करने के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता है। कॉरपोरेट ट्रेजरी शायद ही कभी अपना पैसा सेविंग्स अकाउंट में रखते हैं. ऐसे में सवाल है कि रिटेल निवेशकों को अपने पैसे पर बेहतर रिटर्न पाने के लिए इन फंडों का उपयोग क्यों नहीं करना चाहिए? साफतौर पर ऐसे कुछ कारण हैं, जिनकी वजह से आज यह आदर्श विकल्प बन गया है।

चेक करें फायदा और नुकसान

बहुत से निवेशक ऐसे हैं जो अपना एक बड़ा फंड बैंक में लंबे समय तक सेविंग्स अकाउंट में रखते हैं। उस पर चाहे जो भी रिटर्न मिले, वह ध्यासन नहीं देते हैं। आप खुद इसका नुकसान चेक कर सकते हैं। जब आप अगली बार अपने बैंक खाते की डिटेल जांचें, तो देखें कि पिछले 12 महीनों में आपके पास हर महीने (अपने सभी खर्चों और ईएमआई का भुगतान करने के बाद) कितना अतिरिक्त पैसा था। फिर इस सरप्लस फंड को लिक्विड फंड में लगाने से आपको जो अतिरिक्त रिटर्न मिलता, उसे कैलकुलेट करें। एक एवरेज रिटर्न के रूप में, आप कैलकुलेशन के लिए 6.5 फीसदी का उपयोग कर सकते हैं, क्योंकि लिक्विड फंड ने पिछले साल में करीब इतना रिटर्न दिया है। इसकी तुलना आपके बैंक द्वारा आपके बचत खाते पर दी जाने वाली ब्याज दर से करें। आप खुद दोनों के बीच अंतर को देखकर चौंक जाएंगे कि आप सरप्लस पैसा लिक्विड फंड में निवेश करते तो कितना अतिरिक्त पैसा कमा सकते थे। आरबीआई के अनुसार, दिसंबर 2023 तक, एक अनुमान के अनुसार, भारत में करंट अकाउंट और बचत खातों में लगभग 23 लाख करोड़ रुपये जमा हैं, यानी निवेशक हर साल लगभग 60,000 करोड़ रुपये की अतिरिक्त रिटर्न क्षमता पर ध्यान नहीं दे रहे हैं।

खबर संक्षेप

राष्ट्र के प्रति युवाओं की भूमिका अहम

बहादुरगढ़। हिंदू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव अमित खत्री ने कहा कि सामर्थ्य, गौरव, वीरता से भरपूर हिंदुत्व की युवा शक्ति को संगठित कर उनके राष्ट्रीय उत्तर दायित्व, उनकी विरासत की सार्वभौमिकता से परिचित करवाया जा रहा है। प्रत्येक वर्ग के युवाओं को अपने साथ जोड़ने के अलावा राष्ट्र के प्रति उनकी मुख्य भूमिका से अवगत करवाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि दलगत राजनीति से ऊपर उठकर मतदाताओं में हिंदू चेतना को जागृत की जा रही है।

आप्रेशन आक्रमण में वांटेड 15 आरोपी काबू

झज्जर। शनिवार को जिला पुलिस द्वारा आप्रेशन आक्रमण चलाया गया। डीसीपी डॉक्टर अर्पित जैन ने बताया कि अभियान में जिले के सभी थाना प्रबंधक, चौकी प्रभारी, सीआईए, एनसी की विभिन्न 19 टीमों का गठन किया गया। जिसमें 75 पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपराधियों पर प्रहार करते हुए विभिन्न मामलों के 15 वांटेड आरोपियों को गिरफ्तार किया। जिनमें थाना शहर बहादुरगढ़ के एरिया में करन नामक एक व्यक्ति की हत्या करने मामले में तीन, मोबाइल फोन चोरी मामले में एक, एक पीओ, नौ बेल जंपर व एक अन्य मामलों के आरोपियों को पकड़ा गया है। उन्होंने बताया कि जिले में किसी भी प्रकार की अपराधिक वारदात को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

कंपनी कर्मचारी की बाइक ले गए चोर

धारूहेड़ा। औद्योगिक एरिया में चोर एक कंपनी के बाहर खड़ी बाइक चंद मिनटों में चोरी कर ले गए। पुलिस शिकायत में बेरली खुर्द निवासी हिमांशु ने बताया कि वह एक कंपनी की गाड़ी पर चालक है। उसने अपनी बाइक कंपनी के बाहर खड़ी की थी। इसके बाद वह काम से अंदर चला गया। थोड़ी देर बाद बाहर आया तो उसे बाइक गायब मिली।

घर से अचानक लापता हुई एक युवती

कसोला। क्षेत्र के एक गांव में रहने वाली मूल रूप से एमपी निवासी 19 साल की युवती अचानक घर से लापता हो गई। युवती के भाई ने पुलिस को दी शिकायत।

पीएमश्री राजकीय कन्या वमावि में प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न

प्रशिक्षण लेने वाले 240 शिक्षकों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया

कक्षा चौथी- पांचवीं के लिए तैयार की गई अभ्यास पुस्तिकाओं में बच्चों को कल्पनाशीलता की उड़ान भरने के लिए खुला आकाश दिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। समापन अवसर पर प्रमाण पत्र के साथ प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षक।

पीएमश्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में झज्जर खंड के शिक्षकों के लिए चलाई जा रही चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला शनिवार को संपन्न हो गई। समापन अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी रूपेंद्र नांदल व जिला एफएलएन समन्वयक डॉक्टर सुदर्शन पूनिया ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। रूपेंद्र नांदल ने कहा कि जिस प्रकार कक्षा पहली से तीसरी तक निपुण मिशन ने सफलता प्राप्त की उसी प्रकार कक्षा चौथी से पांचवीं में भी मिशन निपुण के अंतर्गत दिया जा रहा यह प्रशिक्षण बच्चों की सीख स्तर को बढ़ाने के मामले में सफलता के नए आयाम स्थापित करेगा। दूसरे चरण की इस कार्यशाला में 120 शिक्षकों ने भाग लिया। दोनों चरणों में कुल मिलाकर 240 शिक्षक प्रशिक्षित हुए। जिन्हें बीआरपी मीना, रेखा बाल्यान, सत्यवान, संजय व दिनेश ने प्रशिक्षित किया।

जिला एफएलएन समन्वयक डॉक्टर सुदर्शन पूनिया ने कहा कि जब नई शिक्षा नीति के अंतर्गत बच्चे कक्षा छठी से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाएंगे, उससे पूर्व वे भाषायी समझ, गणितीय ज्ञान व उसे दैनिक जीवन में प्रयोग करने का कौशल सीख चुके होंगे। कक्षा चौथी- पांचवीं के लिए तैयार की गई अभ्यास पुस्तिकाओं में बच्चों को कल्पनाशीलता की उड़ान भरने के लिए खुला आकाश दिया गया है। जिसमें बच्चों को रटकर नहीं बल्कि समझ कर काम करना होगा। कार्यशाला के समापन पर प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

पोस्टर मेकिंग में अंशुल प्रथम

- धांधलान राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में पोस्टर मेकिंग व स्लोगन प्रतियोगिताएं हुई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बेरी

बेरी। झज्जर। प्रतियोगिता के दौरान उपस्थित विद्यार्थी एवं स्कूल स्टॉफ सदस्य।

शनिवार को क्षेत्र के गांव धांधलान स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत पोस्टर मेकिंग, स्लोगन प्रतियोगिताएं करवाई गई। प्राचार्या सुनीता देवी ने बताया कि वोट के प्रति जागरूकता को लेकर विद्यालय में निरंतर स्वीप गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने विद्यार्थियों को 25 मई को होने वाले लोकसभा चुनाव को लेकर शत प्रतिशत मतदान करने के लिए शपथ दिलाई। वहीं जागरूकता कार्यक्रम में वोटिंग के लिए पोलिंग पार्टी द्वारा दी जाने वाली ड्यूटी का तन्नू, स्वाति, काजल और रिया आदि छात्राओं ने बखूबी निर्वहन किया। वहीं पोस्टर मेकिंग मुकाबले में अंशुल, आफरीन और रितिका ने क्रमशः पहला, दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार स्लोगन प्रतियोगिता में नेहा ने प्रथम,स्नेहा ने द्वितीय और अंजलि ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन टीचर एजुकेशन में विदाई समारोह का आयोजन

- विशाल मोर को मिस्टर फेयरवेल और लक्ष्मी को मिस फेयरवेल चुना गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन टीचर एजुकेशन में अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान अनेक प्रतियोगिताओं के माध्यम से विशाल मोर को मिस्टर फेयरवेल और लक्ष्मी को मिस फेयरवेल चुना गया जबकि एकता और दीपक रनरअप रहे। कार्यक्रम के दौरान संस्थान निदेशक डॉक्टर ऋषि गोयल व प्राचार्या डॉक्टर संतोष ने संस्थान से विदा होने वाले विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

टैलेंट हंट में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

- कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने नृत्य, गायन, भाषण व समूह नृत्य की प्रस्तुति दी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। टैलेंट हंट में प्रस्तुति देते हुए प्रतिभागी छात्रा।

राय साहब पंडित बसंत लाल एजुकेशन सोसायटी द्वारा संचालित हिमालय हाई स्कूल में शनिवार को टैलेंट हंट का आयोजन किया गया। स्कूल अध्यक्षा सुभद्रा देवी की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने नृत्य, गायन, भाषण व समूह नृत्य की प्रस्तुति दी।

अपने संबोधन में सुभद्रा देवी ने विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों व खेल गतिविधियों में भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

इस मौके पर स्कूल निदेशक दीपक कुमार व प्राचार्या लीला देवी ने भी विद्यार्थियों का उत्साह वर्धन करते हुए उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

विद्यार्थियों को मतदान के लिए किया प्रेरित

- राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में शॉर्ट फिल्म दिखाकर किया जागरुक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। जागरुकता कार्यक्रम में शॉर्ट फिल्म देखते हुए विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में राजनीति शास्त्र विभाग और जनसंचार विभाग द्वारा वोट बनवाने और वोट डालने के लिए विद्यार्थियों को एक शॉर्ट फिल्म दिखाकर जागरुक किया गया। जनसंचार विभागाध्यक्ष डॉक्टर अमित भारद्वाज और राजनीति शास्त्र विभागाध्यक्ष अशोक कुमार ने बताया कि फिल्म के माध्यम से विद्यार्थियों ने मताधिकार के महत्त्व और इसकी राष्ट्र निर्माण में भूमिका के बारे में जानकारी हासिल की। विद्यार्थियों ने यह संकल्प लिया कि वे आगामी लोकसभा चुनाव में अपना वोट जरूर डालेंगे। डॉक्टर अमित भारद्वाज ने कहा कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। लोकतंत्र की अनिवार्य शर्त सहभागिता है। मतदाता लोकतंत्र की नींव है। मतदाता अपने प्रतिनिधियों को चुनते हैं, जो देश का शासन चलाते हैं। सही और निष्पक्ष मतदान प्रक्रिया के कारण ही इतनी विविधताओं के बावजूद भारत विश्व का सबसे सफल लोकतंत्र माना जाता है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी अनिवार्य रूप से मतदान करते हुए लोकतंत्र के महायज्ञ में अपनी आहुति डालें।

चार दिवसीय एफएलएन प्रशिक्षण शिविर संपन्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गोच्छी में निपुण हरियाणा मिशन के अंतर्गत चलाया जा रहा एफएलएन प्रशिक्षण शिविर शनिवार को संपन्न हो गया। शिक्षकों को प्रशिक्षण शिविर के दौरान पहले दो दिन हिंदी और शेष दो दिनों में गणित व अंग्रेजी विषय की रूपरेखा से अवगत कराया गया। इसके अलावा हिंदी भाषा के चारों कौशलों सुनने, बोलने, लिखने व पढ़ने संबंधी रणनीतियों को सांझा करते हुए शिक्षक संदर्शिका, कार्य पुस्तिकाओं व गतिविधियों के माध्यम से शिक्षक की समझ को मजबूत करने व शिक्षण को रुचिकर बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया गया। खंड शिक्षा अधिकारी अशोक ने प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों को प्रमाण पत्र वितरित किए।

संदिग्ध परिस्थितियों में लड़की लापता

बहादुरगढ़। इलाके में स्थित एक ईंट भट्ठे से संदिग्ध परिस्थितियों में लड़की लापता हो गई है। परिजन तमाम संभावित ठिकानों पर तलाश चुके हैं लेकिन दो दिन बीत जाने के बाद भी उसका कुछ अता-पता नहीं है। परिजनों ने अब पुलिस को सूचना देकर तलाश की गुहार लगाई है। मामला बादली थाना क्षेत्र के अधीन लगते एक गांव का है। दरअसल, उत्तर प्रदेश मूल का एक परिवार यहां ईंट भट्ठे पर मजदूरी करता है। परिवार के मुखिया के मुताबिक, 25 अप्रैल की रात को सभी खाना खाकर अपनी झुग्गी में सो गए थे। रात करीब एक बजे मेरी आंख खुली तो बड़ी बेटी नजर नहीं आई। इसके बाद उसे इधर-उधर तलाश किया लेकिन कहीं नहीं मिली। तब से लेकर अब तक उसे तमाम ठिकानों पर ढूंढ चुके हैं लेकिन कुछ सुराग नहीं लग पाया है। आशंका है कि उसे किसी ने कहीं छिपा लिया है। पुलिस तलाशने में मदद करे।

बच्चों को अच्छी-बुरी आदतों का अंतर समझाया

बहादुरगढ़। अपने शिक्षकों के साथ प्रशंसा पत्र दिखाते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

- सभी स्वयंसेवकों की उनके कार्य के लिए सराहना की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

गांव लडरावन स्थित श्रीस्वामी समर्थ इंटरनेशनल स्कूल में विद्यार्थियों को अच्छी आदतों और बुरी आदतों में अंतर समझाया गया। साथ ही हनुमान जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित शिविर में स्वयंसेवकों की भूमिका निभाने वाले विद्यार्थियों को प्रशंसा पत्र तथा उपहार वितरित किए गए। संचालक अभिषेक छिल्लर ने कहा कि स्कूल एक ऐसी जगह है, जहां बच्चे अपनी जिंदगी के कई अहम पाठ सीखते हैं। कुछ आदतें और नियम ऐसे हैं, जिन्हें विद्यार्थियों को सीखना बहुत ही आवश्यक है। विद्यार्थी को स्कूल में ही कुछ स्किल सिखा दिएं जाए तो इससे उनका भविष्य और बेहतर हो सकता है। विद्यार्थियों को किसी भी परिस्थिति को समझना और फिर उसके मुताबिक व्यवहार करना आना चाहिए।

बच्चों को स्कूल में अपने दोस्तों के साथ लंच के अलावा किताबें, पेंसिल आदि शेयर करना अच्छी आदतें होती हैं। सभी स्वयंसेवकों की उनके कार्य के लिए सराहना की और उन्हें आगे भी ऐसे ही बढ़-चढ़कर काम करने के लिए प्रेरित किया। स्कूल प्रिंसिपल किशोर कुमार शर्मा सहित सभी अध्यापक व विद्यार्थी मौजूद रहे।

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में विदाई समारोह

- दीपक को मिस्टर फेयरवेल तथा निमी को मिला मिस फेयरवेल का खिताब

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में बीए तृतीय वर्ष विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया। प्रशासनिक अधिकारी डॉक्टर अनीता फौगाट की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में बीए द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने बीए तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों को विदाई दी। इस दौरान दीपक को मिस्टर फेयरवेल व निमी को मिस फेयरवेल चुना गया।

कॉलेज की प्रशासनिक अधिकारी डॉक्टर अनीता फौगाट ने महाविद्यालय से विदा होने वाले विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस मौके पर डॉक्टर अमरदीप, पवन कुमार, डॉक्टर राजपाल, प्रदीप कुमार सहायक प्रोफेसर मौजूद रहे।

आयोजन

महाविद्यालय में बीबीए अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए मॉक इंटरव्यू का आयोजन

जिला स्तरीय प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थियों का अभिनंदन

- साक्षी ने जिला स्तरीय विधि साक्षरता प्रतियोगिता में पोस्टर मेकिंग में पहला स्थान हासिल किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। शिक्षकों के साथ मौजूद जिला स्तरीय विधि साक्षरता प्रतियोगिता की विजेता छात्राएं।

राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय की बीए प्रथम वर्ष की छात्रा साक्षी ने जिला स्तरीय विधि साक्षरता प्रतियोगिता में पोस्टर मेकिंग में पहला स्थान हासिल किया जबकि एमए मनोविज्ञान की छात्रा अनामिका ने भाषण प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर दलबीर सिंह ने विजेता विद्यार्थियों का अभिनंदन किया। इस मौके पर विधि साक्षरता प्रकोष्ठ प्रभारी प्राध्यापिका प्रियंका, प्राध्यापक प्रदीप यादव, दीपक, निहारिका व जनसंचार विभागाध्यक्ष डॉक्टर अमित भारद्वाज सहित अन्य भी मौजूद रहे। दूसरी ओर महाविद्यालय में बीबीए अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए मॉक इंटरव्यू का आयोजन किया गया जिसमें 21 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विभागाध्यक्ष सौरभ जैन ने बताया कि मॉक इंटरव्यू से विद्यार्थियों को आत्मविश्वास हासिल करने में मदद मिलती है। महाविद्यालय के प्लेसमेंट अधिकारी डॉक्टर श्रीकृष्ण दूहन, एनसीसी अधिकारी डॉ. कविता, प्राध्यापिका डॉ. अंजू बाला और प्राध्यापक शिवशंकर द्वारा विद्यार्थियों का साक्षात्कार लिया गया।

विद्यार्थियों को कराई मेडिटेशन क्रियाएं

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान मेडिटेशन क्रियाओं का अभ्यास करते हुए विद्यार्थी।

- ग्याहरवीं व बाहरवीं के लगभग दो सौ से अधिक बच्चों ने भाग लिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

एलए सीनियर सैकेंडरी स्कूल में हार्टफुलनेस ध्यान केंद्र की तरफ से कॉर्डिनेटर राजबीर व ट्रेनर केवल सिंह द्वारा मेडिटेशन क्रियाएं कराई गई। स्कूल प्राचार्या निधि कादियान व प्रबंधक केएम डागर ने कहा कि हमें इस तनावग्रस्त वातावरण में बच्चों के लिए इस तरह के मेडिटेशन कार्यक्रमों का आयोजन करते रहना चाहिए। मेडिटेशन कार्यक्रम में ग्याहरवीं व बाहरवीं के लगभग दो सौ से अधिक बच्चों ने भाग लिया। स्कूल संचालक संचालक जगपाल गुलिया, जयदेव दहिया, अनिता गुलिया, नीलम दहिया ने बताया कि मेडिटेशन व यौगिक क्रियाएं हमेशा मानव जीवन के लिए बेहतर होती हैं। इस मौके पर एचओडी रविंद्र लोहचब, पिंकी अहलावत, पुष्पा यादव सहित अन्य भी मौजूद रहे।

NOTICE

I, Kuldeep S/o Rameshwar Das, R/o H.No. 81, Village Nizampur, Distt. Sonipat, Pin-131302, Haryana declare that I have lost my Sale Deed 2511 dt. 26.06.18 at Nahara Nahri Road, Near Shivam Hospital, Bahadurgarh, Distt. Jhajjar.

खबर संक्षेप

झज्जर। लोगों को चुग्गापात्र वितरित करते हुए धर्मेंद्र बसवाल।

पक्षियों को दाना-पानी डालने के लिए चुग्गापात्र वितरित

झज्जर। गर्मी में भूख प्यास से बेहाल पक्षियों के दाना पानी की व्यवस्था के लिए धर्मेंद्र बसवाल द्वारा चुग्गापात्रों का निःशुल्क वितरण किया गया। उन्होनें लोगों से आह्वान किया कि वे पक्षियों के लिए रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े या सफेद ज्वारा डालें। इस मुहिम पर नगर परिषद के चेयरमैन जिले सिंह सैनी, नरेश प्रजापत, रामपत प्रजापत, पार्षद प्रतिनिधि बिट्टू छाबड़ा, नरेश वाल्मीकि, जयपाल, हेमंत वाल्मीकि, दिनेश छिक्कारा, कमल सैनी, किशोर सैनी, व्यापार मंडल से रमेश सैनी, विनय कुमार, हरीश कौशिक, मनोज सोनी, कृष्ण बसवाल, पंडित गुलशन शर्मा, रोहित कटारिया, ओम प्रकाश सैनी, शंटी तलवार, हेमंत नंदा, मनोज दीवान आदि ने समिति की इस पहल की सराहना की है।

ड्रेन रोड पर शोपीस बनीं स्ट्रीट लाइट

बहादुरगढ़। शहर के वेस्ट जुआं ड्रेन पर नगर परिषद ने लाखों रुपये खर्च कर स्ट्रीट लाइटें तो लगवाई। लेकिन कुछ लाइटों को छोड़कर अधिकांश लाइट बंद रहती हैं। जिस कारण लोगों को काफी परेशानी हो रही है। बता दें कि शहर के सेक्टर-9 मोड़ से सांखोल गांव तक वेस्ट जुआं ड्रेन के ऊपर बनी सड़क के बीचोंबीच सेंट्रल वर्ज पर नगर परिषद ने स्ट्रीट लाइटें लगवाई थी। इन लाइटों की गुणवत्ता को लेकर शुरुआत से ही सवाल उठाए जा रहे थे। अब अधिकांश लाइटें बंद पड़ी रहती हैं। शाम होने के बाद वाहन चालकों के अलावा पैदल राहगीरों को यहां से गुजरने में काफी तकलीफ उठानी पड़ती है।

बाल कवियों ने किया प्रभावित

बहादुरगढ़। शहर के डीएवी सेनेटरी पब्लिक स्कूल में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए बाल कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें दीपांशी, लक्ष्य, साक्षी और स्नेहा समेत करीब 30 विद्यार्थियों ने कविताएं सुनाई। कवि कृष्ण गोपाल विद्यार्थी ने प्रस्तुति देने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। कक्षा तीसरी से पांचवी तक के विद्यार्थियों ने टैलेंट हंट प्रतियोगिता में भाग लिया। बच्चों ने गीत, नृत्य और कविताओं के माध्यम से अपनी प्रतिभा दिखाई।

चैतन्य टेक्नो स्कूल में इंडियन नेशनल टैलेंट सर्च ओलंपियाड पुरस्कार वितरण समारोह

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थी हुए सम्मानित

आरव को टेबल, गोल्ड मेडल व मेरिट सर्टिफिकेट दिया गया

बहादुरगढ़। ओलंपियाड में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर सम्मानित विद्यार्थी अपने शिक्षकों के साथ तथा गणित का महत्व दर्शाते पोस्टर दिखाते छात्र। फोटो: हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

चैतन्य टेक्नो स्कूल में इंडियन नेशनल टैलेंट सर्च ओलंपियाड पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में तीसरी कक्षा से दसवीं कक्षा के छात्रों को सम्मानित किया गया। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका ललिता ने पुरस्कार वितरण करते हुए बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले आरव को टेबल, गोल्ड मेडल व मेरिट सर्टिफिकेट दिया गया। द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली सिया तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले केशव और आर्यन को स्मार्ट वॉच देकर सम्मानित किया गया। अन्य 15 विद्यार्थियों को कंसोलेशन पुरस्कार और गोल्ड मेडल आदि दिए गए, जबकि 143 विद्यार्थियों को मेरिट सर्टिफिकेट दिए गए। प्रिंसिपल ललिता ने अन्य विद्यार्थियों को भी इंडियन नेशनल टैलेंट सर्च ओलंपियाड में बढ़ चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर मौजूद अन्य शिक्षकों ने भी बच्चों को आशीर्वाद दिया।

पोस्टर बनाने में प्रथम रहा अनुज

बहादुरगढ़। राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ में गणित विभाग की मैथो होलिक समिति द्वारा पोस्टर मेकिंग का आयोजन किया गया। कार्यवाहक प्राचार्य सुमन हुड्डा ने बताया कि प्रतियोगिता ना केवल बौद्धिक रूप से प्रोत्साहित करती है, बल्कि छात्रों को गणित विषय के विकासशील परिदृश्य को समझने के लिए प्रेरित करती है। छात्रों ने विभिन्न गणित नियमों का महत्व और दैनिक जीवन क्रियोमें गणित के प्रयोग को दर्शाया। गणित विभाग के अध्यक्ष डॉ मुकेश कुमार के निर्देशन में हुई प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अनुज ने प्राप्त किया। अंशिका ने द्वितीय व काजल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता का मूल्यांकन प्रो राकेश, डॉ शशी व प्रो रीना द्वारा किया गया। इस मौके पर डॉ अनूप कुमार, प्रो अनुराधा, प्रो सोनिया व प्रो पिंकी आदि उपस्थित रहे। प्रतियोगिता की आयोजक प्रो अनुराधा के साथ छात्र समिति के आयुष व एकता ने इसमें अहम भूमिका निभाई।

झज्जर। वीसी उपरांत बैठक में आवश्यक निर्देश देते हुए डीसी कैप्टन शक्ति सिंह।

शराब की अवैध तस्करी व बिक्री पर रोक के निर्देश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

जिले में आगामी 25 मई को होने वाले लोकसभा आम चुनाव को शांतिपूर्ण व निष्पक्ष तरीके से संपन्न कराने के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह सजग एवं सतर्क है। झज्जर जिला दिल्ली बॉर्डर के साथ लगने के कारण संबंधित अधिकारी जिला में शराब की अवैध तस्करी व बिक्री पर रोक को लेकर नजर रखते हुए अतिरिक्त चौकसी बरतें। यह निर्देश डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी कैप्टन शक्ति सिंह ने मुख्य सचिव टीवीएसएन प्रसाद की वीसी उपरांत संबंधित अधिकारियों बैठक में दिए। उन्होंने निर्देश दिए कि शराब की अवैध सप्लाई व बिक्री रोकने लिए नाके लगाकर विशेष चेकिंग की जाए और एसएसटी टीमों द्वारा निगरानी करते हुए गश्त बढ़ाई जाए। वहीं आबकारी अधिकारी शराब के ठेकों आदि की पूरी जानकारी पुलिस विभाग को उपलब्ध कराएं। डीसीपी अर्पित जैन ने कहा कि अवैध रूप से शराब की सप्लाई व बिक्री में संलिप्त पाए जाने वाले लोगों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

चुनावी प्रक्रिया के दौरान एमसीएमसी रखेगी पेड न्यूज पर नजर

झज्जर। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी कैप्टन शक्ति सिंह ने बताया कि लोकसभा चुनाव के दौरान उम्मीदवारों व राजनीतिक दलों के प्रचार-प्रसार पर निरंतर निगरानी रखने के लिए जिला स्तर पर मीडिया सर्टिफिकेशन एंड मॉनिटरिंग कमेटी का गठन किया गया है। यह कमेटी चुनाव के दौरान प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक व सोशल मीडिया पर राजनीतिक चुनाव प्रचार की मॉनिटरिंग करेगी। इसके अलावा पेड न्यूज पर कार्रवाई करना व मीडिया माध्यमों पर चुनावी विज्ञापनों के प्रकाशन व प्रसारण से पूर्व प्रमाण पत्र प्रदान करना है।

स्कूल में विद्यार्थियों ने मनाया रेड-डे

- बच्चों ने लाल रंग से संबंधित भोजन व पंसदीदा खिलौनों के साथ आनंद उठाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

आरईडी विद्यालय में नर्सरी से यूकेजी कक्षा तक के विद्यार्थियों द्वारा रेड-डे मनाया गया। इस दौरान विद्यार्थी जहां लाल रंग की ड्रेस पहनकर विद्यालय पहुंचे वहीं लाल रंग से संबंधित भोजन व पंसदीदा खिलौनों के साथ आनंद उठाया। गतिविधि संचालक अध्यापिका रेशम, अंजू, प्रीति व सुमन ने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को लाल रंग की पहचान कराना रहा। प्राचार्या अनिता सिवाच ने कहा कि इस प्रकार की गतिविधि से बच्चे लाल रंग से भली भांति परीचित हो जाते हैं।

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान रेड ड्रेस में मौजूद विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

यूपीएससी रैंकर उदित कादियान को किया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

संस्कारम पब्लिक स्कूल खातीवास में शनिवार को आयोजित सम्मान समारोह के दौरान यूपीएससी टॉपर्स में शामिल होकर 375वीं रैंक प्राप्त करने वाले उदित कादियान का सम्मान किया गया। समारोह की शुरूआत मां शारदे को पुष्पांजली देकर की गई। संस्कारम समूह के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल के साथ-साथ यादव सभा प्रधान रामावतार, सरपंच रमेश, रत्नसिंह, रामनिवास, डॉक्टर सुनील कादियान, विरेंद्र दरोगा, अजीत सिंह, श्रीकृष्ण, साधु राम, अतर सिंह , वीर सिंह द्वारा दूबलधन गांव निवासी उदित कादियान को सम्मानित करते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। यूपीएससी रैंकर उदित ने अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के संघर्ष और माता-पिता के सहयोग और समर्पण को दिया। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जीवन में हार-जीत किसी एक हार या जीत के भरोसे तय नहीं की जा सकती। प्रत्येक हार जहां कुछ ना कुछ सीख देती है वहीं प्रत्येक जीत हौसला बढ़ाने का काम करती है।

झज्जर। यूपीएससी रैंकर उदित कादियान को सम्मानित करते हुए संस्कारम ग्रुप के चेयरमैन महिपाल एवं अन्य। फोटो: हरिभूमि

पशु चिकित्सा दिवस पर प्रतियोगिताओं का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

संस्कारम वेटरनरी कॉलेज में विश्व पशु चिकित्सा दिवस के अवसर पर एंटी-रेबीज टीकाकरण शिविर सहित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुओं के स्वास्थ्य और उनकी चिकित्सा की महत्वता के लिए लोगों के बीच जागरूकता फैलाना रहा। एंटी-रेबीज टीकाकरण शिविर में पशुओं में होने वाली रेबीज के संभावित संक्रमण से बचाव के लिए जागरुक किया गया। कुलाधिपति डॉक्टर महिपाल ने विद्यार्थियों को पशुओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने की सलाह दी। इस दौरान आयोजित निबंध और चित्रकला प्रतियोगिता परिणामों में चित्रकला में जैन बाबू ने पहला स्थान प्राप्त किया जबकि निबंध लेखन में अभिनव प्रथम रहा जबकि मनीष कुमार यादव को सांत्वना पुरस्कार से नवाजा गया। नारा प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मुस्कान ने जीता। सभी विजेताओं को कुलाधिपति डॉक्टर महिपाल द्वारा पुरस्कृत किया गया।

झज्जर। प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थियों के साथ कुलाधिपति डॉक्टर महिपाल।

हरियाली व सुलेखन के लिए किया प्रेरित

बहादुरगढ़। शहर के त्रिवेणी मैमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शनिवार को ग्रीन-डे और हिंदी सुलेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। नन्हे बच्चों ने अपने परिधानों के माध्यम से हरियाली को दर्शाया। बच्चे हरे पेड़-पौधे अथवा हरी सब्जी व पत्तियों के रूप में बेहद प्रभावशाली नजर आए। बच्चों ने अपने रूप से समझाया कि जीवन में हरियाली होनी अति आवश्यक है। इस कार्यक्रम से श्याम की बगिया के बच्चों ने मन मोह लिया। दूसरी तरफ कक्षा पहली से बारहवी तक के बच्चों ने हिंदी सुलेखन प्रतियोगिता में भाग लिया। बच्चों ने परोपकार, निरंतर अभ्यास, सच्ची मित्रता, भारतीय संस्कृति, मन के हारे हार है आदि विषयों पर बेहद अच्छा सुलेखन किया। स्कूल निदेशिका संगीता वर्मा और प्रधानाचार्य अनिल कुमार ने बच्चों को हरियाली और सुलेखन के बारे में जानकारी दी। हरियाली बढ़ाने तथा सुंदर तरीके से लिखने के लिए प्रेरित किया।

मादक पदार्थ गांजा सहित एक आरोपी पकड़ा (झज्जर) पुलिस की एक टीम द्वारा मादक पदार्थ गांजा सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। शहर थाना प्रभारी सदानंद ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को पकड़ा गया है। पकड़े गए आरोपी की नियमानुसार तलाशी लेने पर उसके कब्जे से नशीला पदार्थ गांजा बरामद हुआ। जिसका वजन करने पर 113 ग्राम पाया गया। आरोपी की पहचान कुलदीप निवासी झज्जर के तौर पर की गई है। आरोपी के खिलाफ नियमानुसार मामला दर्ज करते हुए आगामी कार्यवाई अमल में लाई गई है।

बूस्टिंग स्टेशन बनने से लोगों को मिलेगी राहत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

सेक्टर-9/9ए में नया पेयजल बूस्टिंग स्टेशन बनने से स्थानीय लोगों को काफी राहत मिलेगी। ग्रीवेंस कमेटी के सदस्य जसबीर सैनी ने पूर्व विधायक नरेश कौशिक के पुत्र हिमांशु कौशिक के साथ जाकर इसका मुआयना किया। उन्होंने बताया कि आदर्श चुनाव आचार संहिता के कारण सीएम इसका उद्घाटन नहीं कर पाए। लेकिन गर्मी को देखते हुए उन्होंने इसे शुरू करवाने के निर्देश दे दिए। तत्कालीन सीएम मनोहर लाल ने दो साल पहले इसके लिए तीन करोड़ 95 लाख रुपए की धनराशि स्वीकृत की थी। इस बूस्टिंग स्टेशन के शुरू होने से सेक्टर के लोगों को दोनों समय पानी मिलेगा। इस अवसर पर जेई आशीष, मुकेश सुपरवाइजर, अंजू गुप्ता, डॉ. निर्मल मिश्रा, वीरेंद्र रोहिल्ला, एएस यादव, एनएस कपूर, महा सिंह रोझा, एमएस रोहिल्ला, आरएन सेठ, रमेश कुमार, सुरेश कौशिक, सुभाष शर्मा, ज्ञान सैनी, शिवमंगल, रामानंद रंगा, पवन वर्मा, अरुण गुप्ता, जगदीश, दीपक शर्मा, नरेश गौड़, नीरज सैनी, अरविंद वर्मा व विनोद आदि मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। बूस्टिंग स्टेशन का मुआयना करते जसबीर, हिमांशु व अन्य। फोटो: हरिभूमि

अवशेष जलाने से नष्ट होती है उर्वरा शक्तिः डॉ. कौशिक

बहादुरगढ़। गेहूं की कटाई के बाद अवशेष नहीं जलाने के लिए किसानों को लगातार जागरूक किया जा रहा है। कृषि विभाग द्वारा चलाए जा रहे अभियान के तहत किसानों को इससे होने वाले नुकसान के बारे में बताया जा रहा है। चूंकि गेहूं की कटाई मजदूरों की बजाय कंबाइन से की जा रही है। ऐसे में गेहूं फसल के तने के अधिकतम भाग खेतों में खड़े रह जाते हैं तथा किसान खेत में बचे फसल अवशेषों को आग लगाकर जला देते हैं। उपमंडल कृषि अधिकारी डॉ. सुनील कौशिक ने बताया कि गेहूं फसल के अवशेषों को जलाने से मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बुरी तरह प्रभावित होती है। इससे नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश की मात्रा जलकर नष्ट हो जाती है। मिट्टी के लाभप्रद सूक्ष्मजीव भी जलकर नष्ट हो जाते हैं। कौशिक ने बताया कि फसल के शेष भाग को जलाने की बजाय छोटे-छोटे बारीक टुकड़ों में काटकर जुताई के दौरान खेत में मिला दें।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

व्यवसाय के साथ सेवाभाव का भी करा रहा आभास

- बच्चा पिछले करीब चार-पांच रोज से मुखौटे बेच रहा

झज्जर। शहर के भट्टी गेट स्थित बीकानेर चौक पर आजकल एक बच्चा पिछले करीब चार-पांच रोज से मुखौटे बेचता दिखाई देता है। पहले के दिनों में जहां यह बच्चा चौक के इस कोने से उस कोने तक अलग-अलग जगह पर अपने मुखौटों के साथ खड़ा रहता था वहीं शनिवार को उसने अपना मुखौटों वाला हैंगिंग बोर्ड बीच सड़क पर बने एक गड्ढे के साथ खड़ा करते हुए डिवाइडर जैसा रूप दे दिया। जिस कारण आते-जाते वाहन भी गड्ढे से बचकर निकलते रहे। दुनियादारी की बातों से अंजान वह मासूम बच्चा दिन भर बीच सड़क पर लगे हैंगिंग बोर्ड की छांव में बैठ कर ग्राहकों का इंतजार करता रहा। उसे देख कर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों वह अपने व्यवसाय के साथ-साथ वाहनों को दुर्घटनाग्रस्त होने से बचाने के लिए समाज सेवा भी कर रहा हो।

उठान कार्य ने गति पकड़ी, सरसों का 77 प्रतिशत तो गेहूं की खरीद का 43 फीसदी उठान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

- झज्जर अनाज मंडी में 25 हजार 841 मीट्रिक टन गेहूं की हुई खरीद

जिलाभर की मंडियों और खरीद केंद्रों पर गेहूं और सरसों की आवक जहां निरंतर जारी है वहीं खरीद कार्य भी सुचारू रूप से किया जा रहा है। शनिवार को स्थानीय अनाजमंडी में भी श्रमिक उठान कार्य में जुटे दिखाई दिए। सरकारी आंकड़ों के अनुसार अब तक 1 लाख 25 हजार 122 मीट्रिक टन गेहूं और 50 हजार 443.68 सरसों की खरीद की जा चुकी है। मंडियों से अभी तक 53 हजार 209 मीट्रिक टन गेहूं का उठान हो चुका है जबकि खरीद की गई 38 हजार 741.82 मीट्रिक टन सरसों उपज का उठान भी किया जा चुका है।

डीसी कैप्टन शक्ति सिंह ने बताया कि जिले की मंडियों में पहुंचे गेहूं में झज्जर अनाज मंडी में 25 हजार 841 मीट्रिक टन, बादली अनाज मंडी में 8177 मीट्रिक टन, ढाकला अनाज मंडी में 5355 मीट्रिक टन, बेरी अनाज मंडी 32 हजार 778 मीट्रिक टन, मातनहेल अनाज मंडी में 15 हजार 388 मीट्रिक टन, माजरा-डी खरीद केंद्र पर 18 हजार 735 मीट्रिक टन, छारा खरीद केंद्र पर 9812 मीट्रिक टन, बहादुरगढ़ अनाज मंडी पर 920 मीट्रिक टन तथा आसौदा खरीद केंद्र पर 8116 मीट्रिक टन गेहूं की खरीद हुई है। सरसों खरीद प्रक्रिया के दौरान अब तक बहादुरगढ़ अनाज मंडी में 1018.71 मीट्रिक टन, बेरी अनाज मंडी में 2691.95 मीट्रिक टन, मातनहेल अनाज मंडी में 12 हजार 486.51 मीट्रिक टन, झज्जर अनाज मंडी में 9 हजार 5.65 मीट्रिक टन तथा ढाकला अनाज मंडी में 8622.07 मीट्रिक टन सरसों की खरीद दर्ज की गई है।

झज्जर। स्थानीय अनाजमंडी में उठान कार्य में जुटे श्रमिक। फोटो: हरिभूम

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 28 अप्रैल 2024

स्पेशलः इंटरनेशनल डांस-डे, 29 अप्रैल

हाल के सालों में देश-विदेश में डांस को फिजिकल और मेंटल हेल्थ के लिए बहुत उपयोगी गतिविधि माना जाने लगा है। यह तथ्य तो सही है ही, लेकिन डांस हमारे भीतर सकारात्मकता और संवेदनशीलता का संचार करता है, सौंदर्यबोध बढ़ाता है। डांस से हम बेहतर इंसान बनते हैं और जीवन को आनंद के साथ जीने के लिए आत्मप्रेरित भी होते हैं।

जीवन की लय पर पैरों की थिरकन

{ कवर स्टोरी / संध्या सिंह }

अमेरिकन कॉलेज ऑफ कॉर्डियोलॉजी, जो कि एक गैरलाभकारी चिकित्सा संस्था है, उसके मुताबिक डांस यानी नृत्य गंभीर हृदय रोगी को भी जीवनदान दे सकता है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि डांस सामान्य जीवन की कितनी सकारात्मक गतिविधि है। समाजशास्त्रियों से लेकर मनोचिकित्सकों तक और हृदय रोग विशेषज्ञों से लेकर सामान्य लोगों तक का मानना है कि डांस हमारे फिट रहने का सबसे आसान और सरस तरीका है।

स्वास्थ्य के लिए संजीवनी

नृत्य अपने आप में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए किसी संजीवनी से कम नहीं है। इसलिए इसका महत्व इस लिहाज से बहुत ज्यादा होता है। हालांकि नृत्य की अपनी एक सामाजिक दुनिया भी है और वह कम प्रभावशाली या कम महत्व की नहीं है। लेकिन ज्यादातर आम लोगों के लिए नृत्य के सर्वाधिक फायदे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य से ही जुड़े होते हैं। आम लोगों के लिए नृत्य शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए खजाने की तरह है। अमेरिकी हृदय स्वास्थ्य विशेषज्ञ, नृत्य को मांसपेशियों की ताकत, भावनात्मक सहन शक्ति और फिटनेस की अपार संभावनाओं वाला केंद्र मानते हैं। मेडिकल निष्कर्षों के मुताबिक डांस करने से 70 से 80 फीसदी तक हृदय बिना और कोई उपाय किए स्वस्थ रहता है। डांस करने से दो दर्जन लाइफस्टाइल संबंधी बीमारियां जैसे चिंता, डिप्रेशन, हाइपरटेंशन और एंजाइटी आपके पास नहीं फटकती हैं। रेग्युलर डांस करने वाले लोगों का शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य तो बेहतर होता ही है, उन्हें कभी ऑस्टियोपोरेसिस का खतरा नहीं रहता। इससे फेफड़ों का स्वास्थ्य बेहतर होता है और कभी वजन भी नहीं बढ़ता है।

बढ़ती है संवेदनशीलता-सकारात्मकता

आज के दौर में नृत्य एक बड़ा कारोबार और कई रचनात्मक कलाओं का केंद्र भी बन गया है। जितने भी परफॉर्मिंग आर्ट हैं, डांस उन सबका सेंटर प्वाइंट है। लेकिन नृत्य के ये संदर्भ उन कुछ रचनात्मक लोगों से ही हैं, जो नृत्य के लिए समर्पित हैं और नृत्य की लय को जीवन की लय मानते हैं। डांस करने से आत्मविश्वास में सर्वाधिक बढ़ोत्तरी होती है। यह आपकी संज्ञानात्मक मेधा में वृद्धि करता है। डांस करने से शरीर में एक लयात्मकता आती है और भरपूर लचीलापन न सिर्फ शारीरिक अंगों मे बल्कि स्वभाव और संवेदना में भी दिखता है। डांस नए दोस्त बनाने में मददगार होता है और हमारे भीतर रचनात्मकता, आत्म अनुशासन और सहयोगात्मक रूप से काम करने की क्षमता विकसित करता है।

यह तो कहने की जरूरत ही नहीं है कि डांस हमारे भीतर सौंदर्यबोध को पैदा ही नहीं करता, उसमें वृद्धि भी करता है। इसीलिए माना जाता है कि एक डांसर की आंखें दुनिया का सृजन देखती हैं। अमेरिका में हुए एक शोध के मुताबिक प्रतिदिन एक घंटे डांस करने वाले लोग बहुत रेयरली किसी आपराधिक घटना में शामिल पाए जाते हैं। नियमित डांस करने वाले लोगों के दिल दिमाग में ऐसे हार्मोन पैदा ही नहीं होते, जो उन्हें किसी भी तरह की आक्रामकता या अपराध की तरफ उन्मुख करें। डांस में इस तरह की सकारात्मकता और संवेदना होती है, जो व्यक्ति को शांत और सौम्य बनाती है। हर डांस करने वाला व्यक्ति लगभग सभी रचनात्मक कलाओं में रुचि लेता है, क्योंकि डांस उसके मन की कंडीशन और 'स्टेट ऑफ माइंड' यानी मनःस्थिति को संवेदना से भर देता है।

एक लय में हो जाते हैं तन-मन

डांस करने वाले के दिमाग में कार्टीसोल नामक हार्मोन का स्तर बेहद कम होता है और ऑक्सीटोसिन हार्मोन का स्तर बढ़ता है यानी फीलगुड हार्मोन की मात्रा बढ़ती है। इसीलिए इंसान द्वारा की जाने वाली सबसे खूबसूरत और खुशहाली से भरी गतिविधि डांस को माना जाता है। कहते हैं, डांस जानने वालों को संगीत की जानकारी स्वतः ही हो जाती है, क्योंकि डांस करने वालों का शरीर ही नहीं, मन भी लय में रहता है और लय संगीत के साथ सहजता से आत्मसात हो जाता है। दुनिया में डांस के अलावा दूसरी ऐसी कोई सक्रिय गतिविधि नहीं है, जिसमें तन और मन एक लय में हो जाते हों। इसीलिए डांस सीखने से कई अन्य कलाओं से भी लगाव बढ़ने लगता है। कहने का सार यही है कि डांस केवल एक कला नहीं, केवल स्वास्थ्य सुधारने का जरिया नहीं बल्कि जीवन को आनंद के साथ जीने की एक अद्वितीय शैली भी है। *

ऐसे हुई डांस-डे की शुरुआत

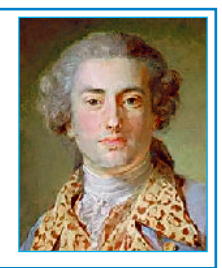

डांस के महत्व के प्रति लोगों में जागरूकता लाने के लिए हर साल 29 अप्रैल को इंटरनेशनल डांस-डे मनाया जाता है, क्योंकि यह तारीख आधुनिक बैले डांस के जनक जीन-जॉर्जेस नोवरे का जन्मदिन है। 1727 को नोवरे इसी दिन पैदा हुए थे। इसलिए साल 1982 से इस दिन को अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस के रूप में मनाया जाता है। हर साल नृत्य दिवस की एक थीम होती है और उस थीम का एक सांकेतिक महत्व होता है। जैसे साल 2023 में अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस की थीम थी-नृत्य दुनिया के साथ संवाद करने का एक तरीका। जबकि इस साल नृत्य दिवस की थीम है-थिएटर और शांति की संस्कृति यानी साल 2024 के नृत्य दिवस की थीम विश्व रंगमंच को समर्पित है।

{ फिटनेस / शिखर चंद जैन }

मस्ती वाला वर्कआउट डांसरसाइज

इन दिनों डांस के साथ एक्सरसाइज यानी डांसरसाइज का ट्रेंड बढ़ रहा है। इनके डिफरेंट टाइप्स के जरिए अनेक यंगस्टर्स मस्ती के साथ खुद को फिट रख रहे हैं। क्या है डांसरसाइज, आप भी जानिए।

गर्मी के दिनों में सूरज सुबह-सुबह ही तेज चमकने लगता है, इसलिए पसीने और गर्मी के डर से घर से बाहर जाकर वर्कआउट करने का मन अकसर नहीं करता है। लेकिन शरीर के लिए एक्सरसाइज बहुत जरूरी है। ऐसे में आप घर में ही पंखा/कूलर चलाकर बोर हुए बिना फुल मस्ती के साथ डांसरसाइज कर सकते हैं।

जाज डांसिंगः सुडौल पैर, जांघें और कमर के लिए जाज डांसिंग आपके लिए परफेक्ट है। इसमें आपको लीप्स, किक्स और जंप्स लेने होते हैं, जिनसे पैरों और जांघों की अच्छी खासी एक्सरसाइज हो जाती है। इससे न सिर्फ लचीलापन और शरीर का संतुलन दुरुस्त होता है बल्कि पोश्चर भी सही हो जाता है। इस डांस में हाथों के मूवमेंट भी खूब होते हैं, जिससे बाहों और हाथों का भी अच्छा वर्कआउट हो जाता है।

शिबामः 45 मिनट सेशन का यह डांस आधारित वर्कआउट विदेशों में सुपरहिट हो चुका है। इसमें लैटिन और हिप-हॉप साउंडट्रेक पर सिंपल डांस स्टेप्स परफॉर्म करने होते हैं। शिबाम की एक क्लास में 600 से ज्यादा कैलोरी तो बर्न होती ही है, साथ ही स्ट्रेस से भी राहत मिलती है। किसी कुशल ट्रेनर की देखरेख में इसकी कुछ क्लासेज अटेंड करने के बाद आप खुद ट्रेंड हो जाएंगे। शिबाम में डांस मूव्स को एरोबिक वर्कआउट के साथ ब्लेंड किया गया है। संगीत के साथ जब शरीर थिरकता है, तो आपको दोहरा लाभ मिलता है तन और मन दोनों फिट होते हैं। इस वर्कआउट से स्टेमिना और कार्डियोवैस्कुलर फिटनेस बढ़ने के साथ-साथ ढेर सारी कैलोरी भी बर्न होती है। तीव्रता के साथ किए गए शिबाम से प्रति घंटे 800 कैलोरी तक बर्न कर सकते हैं।

जाज डांसिंग करते यंगस्टर्स

जुंबाः कोलंबियन फिटनेस एक्सपर्ट द्वारा डिजाइन किया गया यह वर्कआउट हमारे देश में भी खूब पॉपुलर हो रहा है। लैटिन म्यूजिक के साथ इसमें तरह-तरह के डांस फॉर्म्स का मिक्सचर है जैसे- सालसा, बेली डांसिंग, सोका, रिगेटन आदि। जुंबा कई प्रकार का होता है जैसे स्विमिंग पूल में एक्वा जुंबा किया जाता है। बच्चों के लिए जुंबा किड्स है और बुजुर्गों के लिए जुंबा गोल्ड है। तरह-तरह के डांस पर थिरकते हुए शरीर की अच्छी-खासी वर्जिश हो जाती है। दिलचस्प होने की वजह से इसे करने में मन भी लगा रहता है।

जुंबा डांसरसाइज करते यंगस्टर्स

पाइलेट्सः इसे मॉर्निंग वर्कआउट का हीरो कह सकते हैं। इसे एक जर्मन फिटनेस एक्सपर्ट ने शुरू किया था और 2005 के बाद से यह पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो गया। कमजोर घुटनों और पीठ दर्द के लिए यह एक शानदार वर्कआउट है, जिसे चटाई पर लेटकर म्यूजिक के साथ किया जाता है। इससे कमर के नीचे का हिस्सा मजबूत होता है और इससे फ्लैक्सिबिलिटी आती है।

पाइलॉक्सिंगः स्वीडन के डांसर विविका जेनसन, जो बाद में पाइलेट्स ट्रेनर बन गए, ने इसकी शुरुआत की। पाइलेट्स और बॉक्सिंग का फ्यूजन है पाइलॉक्सिंग। पाइलॉक्सिंग नंगे पैरों से वजनदार ग्लव्स पहन कर की जाने वाली डांस एक्सरसाइज है। महिलाओं के लिए यह खासतौर पर फायदेमंद है, क्योंकि इससे उनकी फिटनेस और कॉन्फिडेंस दोनों बढ़ते हैं।

बॉलीवुड डांसिंगः एक्सरसाइज करने का मन नहीं है और मूड ऑफ है, तो बस बॉलीवुड के मस्ती भरे जोशीले गाने चला लें और उन पर थिरकना शुरू कर दें। आप फील ही नहीं कर पाएंगे कि फुल मस्ती में नाचते-नाचते आपकी पूरी बॉडी में मूवमेंट्स हो रहे हैं और अनजाने में ही घंटे भर का वर्कआउट हो गया। डांस से बॉडी में लचीलापन भी आता है।

मसाला भांगड़ाः आपके दिल के लिए यह जबर्दस्त कार्डियो एक्टिविटी है। यंगस्टर्स के लिए यह एक शानदार और मस्ती भरा वर्कआउट प्लान है। इसमें पॉप और भांगड़ा डांस का फ्यूजन है। इसमें ढोल की बीट पर फास्ट मूवमेंट्स किए जाते हैं। यह एक इंटेंस डांस वर्कआउट है। *

{ ट्रेडिशन / अंजू जैन }

प्राचीन-बहुरंगी-भव्य भारतीय नृत्य परंपरा

भले ही आज देश-विदेश में नृत्य की अनेक शैलियां विकसित हो चुकी हैं। लेकिन अपने देश में नृत्य परंपरा बहुरंगी, भव्य और अत्यंत प्राचीन रही है। यहां के शास्त्रीय और लोकनृत्यों की छटा देखते ही बनती है।

हमारे देश में नृत्य और संगीत का न सिर्फ धर्म और अध्यात्म से गहरा नाता रहा है, पौराणिक काल से इसकी परंपरा भी बरकरार है। प्राचीन ग्रंथों में से एक 'सामवेद' को संगीत का सबसे प्राचीन ग्रंथ माना जाता है। भरत मुनि का 'नाट्य शास्त्र' नृत्यकला का सर्वप्रथम और प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। इंद्र की सभा में मेनका आदि अप्सराओं द्वारा नृत्य किए जाने का उल्लेख मिलता है। हड़प्पा सभ्यता में नृत्य करती हुई युवतियों की मूर्ति पाई गई है, जिससे साबित होता है कि उस काल में ही नृत्यकला का विकास हो चुका था। खजुराहो के मंदिर हों या कोणार्क के मंदिर, प्राचीन काल में निर्मित इन मंदिरों की दीवारों पर गंधर्वों की मूर्तियां अंकित हैं। उन मूर्तियों में लगभग सभी तरह के वाद्य यंत्रों और नृत्य भंगिमाओं को दर्शाया गया है। भगवान शिव के नृत्यरत नटराज स्वरूप के बारे में हम जानते ही हैं। उनका तांडव नृत्य भी सब जानते हैं। इसी तरह श्रीकृष्ण की रासलीला में भी नृत्य और संगीत का वर्णन मिलता है।

भरतनाट्यम

डांडिया

नृत्य का जनक है हमारा देशः हमारे देश के प्राचीन शास्त्रीय नृत्य दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। हमारे देश में नृत्य की परंपरा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। भारत की नृत्य शैलियां दुनिया भर में लोकप्रिय हैं। दुनिया की कई नृत्य शैलियां तो हमारी प्राचीन नृत्यकला से ही प्रभावित हैं। नाट्यशास्त्र के अनुसार भारत में कई तरह की शास्त्रीय नृत्य शैलियां अलग-अलग राज्यों में विकसित हुई हैं जैसे- भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी, ओडिसी, कथक, कथकली, यक्षगान, कृष्णअट्टम, मणिपुरी और मोहिनीअट्टम।

कुचिपुड़ी

भरतनाट्यमः यह नृत्य भारत के अति प्राचीन नृत्यों में शुमार है। इसका उल्लेख भरत मुनि के नाट्य शास्त्र में भी मिलता है। मूलतः तमिलनाडु के भरतनाट्यम नृत्य में भाव, राग और ताल का संगम होता है। इस नृत्य में चेहरे के हाव-भाव, हाथ, पैर की गतिविधियां और मुद्राओं द्वारा भावनाओं को अभिव्यक्त किया जाता है।

कथकः कथक का शाब्दिक अर्थ कथा होता है। प्राचीन काल में कथा यानी कहानी सुनाने वाले लोगों को कथक कहा जाता था। शुरुआत में यह नृत्य उत्तर भारत में ब्राह्मणों द्वारा मंदिरों में किया जाता था। यह नृत्य बालकृष्ण की लीलाओं, दंतकथा और अन्य पौराणिक कथाओं पर किया जाता है। इस नृत्य कला में चेहरे के हाव-भाव और मुद्राओं को विशेष महत्व दिया जाता है। इस नृत्य में मुकुट के साथ-साथ चेहरे के श्रृंगार के लिए विविध रंगों का भी प्रयोग किया जाता है। रामायण तथा महाभारत की कथा पर भी यह नाट्य नृत्य किया जाता है।

कुचिपुड़ीः कुचिपुड़ी आंध्रप्रदेश के कृष्णा जिले में एक गांव का नाम है। इसी गांव में कुचीपुड़ी नृत्य का जन्म हुआ। शुरुआत में यह नृत्य केवल पुरुष ब्राह्मणों द्वारा ही भगवान को समर्पित किया जाता था और पुरुष ब्राह्मण ही महिला का रूप लेकर नृत्य करते थे। समय बदला तो महिलाएं भी कुचीपुड़ी नृत्य में हिस्सा लेने लगीं। इस नृत्य में शारीरिक संतुलन का कौशल प्रदर्शित किया जाता है। पानी से भरा हुआ घड़ा लेकर तथा पीतल की थाली की किनारी पर भी यह नृत्य किया जाता है।

मणिपुरीः यह नृत्यकला अन्य शास्त्रीय नृत्य कलाओं से भिन्न है। मणिपुरी नृत्य कला में पोशाक भी अन्य नृत्यकलाओं से भिन्न होती है। इसमें शरीर धीमी गति से थिरकता है। इसमें तांडव और रास्य दोनों का समावेश किया जाता है।

ओड़ीसीः कोणार्क के सूर्यमंदिर तथा भुवनेश्वर की प्राचीन गुफा की दीवारों में इस नृत्य के चित्र मिलते हैं। इस नृत्य की मुख्य मुद्रा त्रिभंग है जिसमें सिर, शरीर और पैर तीन हिस्सों में बांटकर नृत्य अभिव्यक्त किया जाता है। इस नृत्य में भगवान विष्णु के अवतार जगन्नाथ, शिव और सूर्य की कथाएं नृत्य नाटिका से मंचित की जाती हैं।

लोकनृत्य की छटाः हमारे देश में तीज-त्योहारों या शादी-विवाह जैसे खुशी के मौकों पर भी नृत्य संगीत का आयोजन खूब किया जाता है। विभिन्न संस्कृतियों में अपनी-अपनी परंपरा के अनुसार घूमर, गिंदड़, चरकुला, गेर, चंग, डांडिया, रम्मत, ढोल और पणिहारी जैसे लोक नृत्यों का खूब आनंद उठाया जाता है। लोग तरह-तरह के स्वांग लेकर नाचते-झूमते हैं और जश्न मनाते हैं। जनजातियों की जीवनशैली का हिस्सा इन लोक नृत्यों की भी छटा देखते ही बनती है। चिकित्सक इन्हें स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभदायक मानते हैं। शारीरिक फिटनेस के साथ-साथ संगीतमय लयबद्ध थिरकन से मानसिक अवसाद से भी राहत मिलती है। *

{ गजल }
डॉ. माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग'

जागो फैसले की घड़ी है

सभी को सियासत में अपनी पड़ी है
मुसीबत जहां थी वहीं पे खड़ी है
किए जा रहे हैं फकत घोषणाएं
अभी पास सबके तिलिस्मी छड़ी है
अगर चाहते हो चमन में महकना
तो जागो जरा फैसले की घड़ी है
तुम्हारे मतों पर है कायम सिंहासन
सभी की नजर अब तुम्हीं पे गड़ी है
बहुत काम बाकी है अब भी वतन में
प्रशासन है ढीला व्यवस्था सड़ी है
न जाने कहां जोश हमको ले जाए
अभी दास्तां हसरतों से बड़ी है
इसे भूख से प्यास से क्या गिला हो
जो हीरे जवाहर कनक से जड़ी है
दिखा देंगे इकदिन तुम्हें अपना जौहर
हमारी नजर में भी पुख्ता कड़ी है
यहां से वहां तक हैं 'नवरंग' कांटें
बढ़े पांव जब भी विवशता अड़ी है

{ लघुकथाएं }

अपना हित

भोला सुबह-सुबह काम की तलाश में घर से निकल चुका था। वह रोज दिहाड़ी मजदूरी करता है। इसी मजदूरी से उसके घर का चूल्हा जलता है। आज भी वह रोज की तरह घर से कुछ दूरी पर बने उस ठिकाने पर आकर खड़ा हो गया, जहां से शहर के लोग दिहाड़ी मजदूर लेकर जाते हैं। भोला यह सोच ही रहा था कि पता नहीं आज काम मिलेगा या नहीं? तभी वहां सफेद कुर्ता-पाजामा पहने एक व्यक्ति आया, भोला से बोला, 'तुम लोग आज के दिन भी मजदूरी करने जा रहे हो। यह तो गलत बात है।' 'क्यों गलत बात है?

आज ऐसा क्या है, जो हम मजदूरी नहीं कर सकते हैं?' भोला ने पूछा। 'आज श्रमिक दिवस है। इसे मई दिवस भी कहते हैं। यह तुम जैसे मजदूरों को अपने अधिकारों और हितों को समझने का दिन है। मैं तुम्हारे हित के लिए आया हूं। चलो हमारे साथ सामने वाले पार्क में, वहां एक बड़ी सभा है। एक बड़े नेताजी आ रहे हैं, उनका भाषण है। नेता जी तुम्हारे अधिकारों के बारे में बताएंगे। तुम्हारे हितों की बात करेंगे।' वह व्यक्ति बोला। भोला उस आदमी से बोला, 'अच्छा तो तुम हमारे हित के लिए आए हो। हम मजदूरों का हित तो अपनी मजदूरी करने में है। अगर आज हम काम नहीं करेंगे तो हमारे घर चूल्हा नहीं जलेगा।

हमारे बीवी-बच्चे भूखे रह जाएंगे। नेता जी के भाषणों से हमारे घर का चूल्हा नहीं जलेगा, हमारा पेट नहीं भरेगा। हमें मालूम है, चुनाव आ गए हैं। इस सभा में नेता जी जो बोलेंगे, उसके पीछे हमारा नहीं, उनका हित होगा। इतने सालों में नेता जी हम मजदूरों के हित की बात करने नहीं आए, अब चुनाव के समय उन्हें हमारी सुधि आई है। क्षमा करें श्रीमान जी, हम आपके नेता जी का भाषण सुनने नहीं जा पाएंगे।' यह सुनकर वह व्यक्ति चुपचाप वहां से चला गया। *

- ललित शौर्य

कच्चे पपीते

सुनो जी, ये इतने ढेर सारे कच्चे पपीते क्यों ले आए? घर में कोई पपीते पसंद नहीं करता। इनका मैं क्या करूं?' पत्नी ने झल्लाते हुए पति से कहा।

'अरे! भाग्यवान इनकी सब्जी बना लो या हलवा बना लो।' पति बोले। 'तुम्हें तो पपीते की सब्जी बिल्कुल पसंद नहीं है, हलवा बच्चे पसंद नहीं करते। मुझे समझ नहीं आया कि जब घर में कोई कच्चा पपीता पसंद नहीं करता तो तुम बेवजह इतने ढेर सारे कच्चे पपीते लेकर ही क्यों आए?' पत्नी और ज्यादा झल्लाकर बोली। 'सच बात बताऊंगा, तुम गुस्सा तो नहीं करोगी? वो क्या है कि सड़क किनारे एक वृद्धा कच्चे पपीते बेच रही थी।

वह किसी महिला से कह रही थी, बहन जी, पपीते ले लो। दो दिन से मेरे घर चूल्हा नहीं जला है। कम दाम में ले लो। किंतु उसका पपीता उसने क्या, किसी ने भी नहीं खरीदा। मुझे उस पर दया आ गई। मैंने उस वृद्धा से पूछा- माता जी, ये पपीते कितने पैसे में देंगी? तो वह बोली-बेटा, जो उचित लगे दे दो। भगवान तुम्हारा भला करेगा। क्या करूं बेटा, बहुत गरीब हूं। घर पर दो-चार पपीते के पेड़ हैं। वही जीने का सहारा हैं। पके पपीते कुछ दिन पहले बेचे थे। उससे दो दिन घर में चूल्हा जला, लेकिन अब पके पपीते नहीं हैं तो कच्चे ही तुड़वा कर लाई हूं ताकि मेरी छोटी सी पोती को खाने को भोजन मिल जाए। वो भी दो दिन से भूखी है। बहू-बेटे दो साल पहले कोरोना में नहीं रहे। तब से जैसे-तैसे गुजारा कर रही हूं। बस मैंने उसके सारे पपीते सौ रुपए में खरीद लिए।' पति ने डरते हुए सारी बात पत्नी से कह दी। यह सुनकर पत्नी भी दुखी होकर बोली, 'ओह! बेचारी गरीब वृद्धा को सौ नहीं दो सौ रुपए दे देना था ताकि वे लोग भरपेट खाना खा पाते।'

पति यह सुनकर पत्नी का मुंह देखते ही रह गए। *

- डॉ. शैल चंद्रा

{ पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश }

जीतने की जिद

एक व्यक्ति की आवाज किस तरह उसकी जिंदगी के सारे फैसलों को नियंत्रित कर सकती है। खुशियों के सारे दरवाजे बंद कर सकती है। हीनभावना से भर सकती है। दोस्तों के आगे शर्मिंदा कर सकती है। आत्महत्या तक पहुंचा सकती है, इसका अंदाजा भगवंत अनमोल के उपन्यास 'गेरबाज' को पढ़कर लगा सकते हैं। अपनी बात को समय पर सही ढंग से न बोल पाना भी पीड़ादायक हो सकता है, यह आप इसे पढ़ते हुए महसूस करेंगे। इस किताब में लेखक ने बड़ी सूक्ष्मता से एक हकलाने वाले व्यक्ति की मनोदशा और उसके जीतने की जिद को चित्रित किया है। यह हकलाहट की समस्या पर लिखा गया एक पठनीय उपन्यास है। *

पुस्तकः गेरबाज (उपन्यास), **लेखकः** भगवंत अनमोल, **मूल्यः** 299 रुपए, **प्रकाशकः** पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (पेंगुइन स्वदेश), गुरुग्राम

अगर आपकी है रचनात्मक लेखन में रुचि

अगर आप अपने आस-पास की बदलती दुनिया पर नजर रखते हैं। आप हटकर सोचते हैं, आपके भीतर विवेचन और लेखन की क्षमता है, आप पत्रकारिता-लेखन के प्रति प्रतिबद्ध हैं, तो जुड़िए दैनिक हरिभूमि से।
हमें दिल्ली में अपने फीचर विभाग के लिए आवश्यकता है-

- वरिष्ठ उप संपादक / उप संपादक
- प्रशिक्षु उप संपादक
- हिंदी टाइपिंग में कुशल ऑपरेटर भी आवेदन कर सकते हैं।

यथाशीघ्र अपना बायोडाटा मेल करें-
E-Mail: haribhoomifeaturedep@gmail.com
हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश से एक साथ प्रकाशित

गर्मी की छुट्टियों में अधिकतर लोग कहीं ना कहीं घूमने का प्लान बनाते ही हैं। अगर आप नेचर लवर हैं और एडवेंचरस ट्रैवलिंग का मजा लेना चाहते हैं तो इस बार जंगल सफारी के लिए जा सकते हैं। अपने घर से निकटतम किसी राष्ट्रीय उद्यान का चयन करें और निकल पड़ें। लेकिन इस दौरान आपको सफारी से जुड़ी कुछ बातों का ध्यान भी रखना होगा।

अगर आप कर रहे हैं जंगल सफारी की प्लानिंग

एडवेंचर ट्रैवेलिंग / विवेक कुमार

भारत की अद्वितीय जैवविविधता की प्रसिद्धि हमारे देश में ही नहीं पूरी दुनिया में है। हर साल पूरी दुनिया से लाखों पर्यटक यहां घूमने के लिए आते हैं। पूर्व हो या पश्चिम, उत्तर हो या दक्षिण, भारत के जंगलों में दुनिया के दुर्लभतम जानवर पाए जाते हैं। इन घने जंगलों, घास के मैदानों और दलदलों में स्थित भारत के जंगलों में देखने के लिए बहुत कुछ होता है। लोग यहां की सफारी करते हैं।

निर्देशों का पालन है जरूरी

अगर आप भी गर्मी की इन छुट्टियों में कहीं घूमने जाना चाहते हैं तो जंगल की सफारी का भी मजा ले सकते हैं। इसके लिए हालांकि पहले से बुकिंग करानी होती है और इसके कुछ नियम कायदे कानून होते हैं, जिनका पालन करना जरूरी होता है। हर

जंगल सफारी में अनुभवी गार्ड और पार्क के अधिकारियों द्वारा जो सुरक्षा निर्देश जारी किए जाते हैं, उनके बारे में पर्यटकों को पहले से अवगत कराया जाता है। उनकी जरा सी भी अनदेखी पर्यटकों के लिए ही नहीं बल्कि वन्यजीव दोनों की सुरक्षा के लिए खतरा साबित हो सकती है।

व्यक्तिगत गाड़ी से जाना प्रातिबंधित

जंगल सफारी के लिए सबसे पहला नियम तो यह है कि जंगल के भीतर आप अपना पर्सनल वाहन नहीं ले जा सकते हैं। इसके लिए जंगल प्रशासन द्वारा ही गाड़ी मुहैय्या कराई जाती है। सफारी के दौरान रंग-बिरंगे ड्रेसेस पहनने की बजाय ब्राउन और ग्रीन कलर की ड्रेसेस, जो वहां के वातावरण से मेल खाते हैं, उन्हें ही पहनकर जाना चाहिए। सफारी के दौरान गाड़ी से बाहर नहीं निकलना चाहिए। जानवरों को नजदीक से देखने का मोह नहीं पालना चाहिए। सफारी की गाड़ी खुली होती है, जिसमें आप इत्मीनान से जंगली जानवर को देख सकते हैं।

जानवरों के नजदीक जाने से बचें

हालांकि यह जरूरी नहीं कि आपको जानवर पास से देखने को मिलें, क्योंकि सफारी द्वारा जंगल के भीतर जो रास्ता बनाया जाता है, उसी सड़क पर चलना होता है। इन रास्तों को पर्यटकों की सुरक्षा और वन्यजीवों के संरक्षण को मदेनजर रखते हुए बनाया जाता है। गाड़ी से बाहर निकलकर जानवर को नजदीक से देखने के चक्कर में या उसको करीब से फोटो लेने से भी बचना चाहिए। जंगल की सफारी में फ्लैश फोटोग्राफी की अनुमति नहीं दी जाती, क्योंकि कैमरे की फ्लैश से जानवर परेशान हो सकते हैं और वो घबराकर आप पर हमला भी कर सकते हैं। सफारी में किसी भी तरह का हथियार लेकर जाने की भी मनाही होती है। सफारी का उद्देश्य वन्यजीवों को दूर से देखना होता है। उनको बहुत करीब से देखने के चक्कर में उनके पास नहीं जाना चाहिए, क्योंकि इससे वे डर सकते हैं। यदि आपके साथ गाइड है तो आप उसे ज्यादा करीब ले जाने के लिए दबाव न डालें। सफारी से उतरकर इधर-उधर पैदल ना घूमें। इससे आप रास्ता भटक सकते हैं।

जानवरों को ना करें परेशान

जानवरों को देखकर उन्हें आवाजें लगाने से उनका प्राकृतिक व्यवहार बिगड़ सकता है। उनके पास जाकर अनावश्यक शोर नहीं करना चाहिए, ना ही संगीत बजाना चाहिए। तेज आवाज वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरण ले जाने की मनाही होती है। यदि आपको जानवर पास से दिखाई दे तो उन्हें खाने के लिए कुछ नहीं दें। इससे उनको स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतें हो सकती हैं।

पर्यावरण का रखें ध्यान

जंगल में खाने के लिए आप जो भी सामान लेकर जाते हैं, कोल्ड ड्रिंक की बोतल, पानी की बोतलें, चिप्स के पैकेट इन सबका कूड़ा वहां ना छोड़कर आएं बल्कि इन्हें अपने साथ लाएं। जंगल में रहने वाले स्थानीय आदिवासियों से भी अनावश्यक मेल-मिलाप ना करें। उनकी तस्वीर उनकी अनुमति के बगैर ना लें। आदिवासियों की संस्कृति और रीति-रिवाजों का सम्मान करें। यहां बताए गए नियमों का ध्यान रखेंगे तो निश्चित ही आपकी जंगल सफारी शानदार और हमेशा यादगार रहेगी। *

राज्य के अनुसार प्रमुख जंगल सफारी

- जवाई बांध तेंदुआ संरक्षण रिजर्व, राजस्थान
- काबिनी वाइल्ड लाइफ सेंचुरी, कर्नाटक
- जिम कार्बेट नेशनल पार्क, उत्तराखंड
- रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान, राजस्थान
- काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, असम
- कान्हा राष्ट्रीय उद्यान, मध्य प्रदेश
- सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान, पश्चिम बंगाल
- पेरियार राष्ट्रीय उद्यान, केरल
- बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, मध्य प्रदेश
- बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान, कर्नाटक
- ताडोबा अंधारी टाइगर रिजर्व, महाराष्ट्र
- पेंच राष्ट्रीय उद्यान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र

युवाओं में बढ़ रहा ई-बाइक्स का क्रेज

बेहतरीन फीचर्स, अट्रैक्टिव, कॉम्पैक्ट, स्पोर्टी, फंकी लुक और ट्रेंडी डिजाइंस के कारण ई-बाइक्स आजकल युवाओं को खूब पसंद आ रहे हैं। इनकी खूबियों और आने वाले दौर में इनके ट्रेंड पर एक नजर।

ऑटो ट्रेंड / वी. कुमार

आज से कुछ साल पहले तक मोटर बाइक्स के मार्केट में ई-बाइक्स की डिमांड न के बराबर थी और युवाओं को तो ये ई-बाइक्स बिल्कुल भी पसंद नहीं आती थीं। लेकिन अब ई-बाइक्स को लेकर यंगस्टर्स की राय काफी बदल रही है।

यंगस्टर्स की बदल रही सोचः वैसे तो ई-बाइक्स हर आयु-वर्ग के लोगों को पसंद आ रही हैं, लेकिन चूंकि बाइक्स ज्यादातर युवा चलाते हैं, इसलिए यह कहना सही होगा कि युवाओं को ये ज्यादा पसंद आ रही हैं। आंकड़ों की बात करें, तो ऑटो मोबाइल को लेकर युवाओं की पसंद-नापसंद पर नजर रखने वाली एक प्रसिद्ध अमेरिकी बिजनेस वेबसाइट के अनुसार- आज अमेरिका में 67 फीसदी ई-बाइक्स के मालिक पुरुष हैं और 33 फीसदी की महिलाएं। इंटरेस्टिंग फैक्ट यह है कि अमेरिका में जितनी भी ई-बाइक्स पिछले तीन सालों में बिकी हैं, उनमें 63 फीसदी के मालिक 18 से 44 साल के युवा हैं। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि अमेरिकी युवाओं को किस कदर पेट्रोल-फ्री ई-बाइक्स पसंद आ रही हैं। गौरतलब है कि सिर्फ अमेरिका ही नहीं, दुनिया भर के युवाओं में ई-बाइक्स का क्रेज बढ़ा है।

पेट्रोल बाइक्स से बना रहे दूरीः पहले यह माना जाता था कि पॉवर और स्पीड के मामले में जो खूबी पेट्रोल वाहनों को हासिल है, वह इलेक्ट्रिक वाहनों को नहीं हासिल होगी। इसलिए यह अनुमान लगा लिया गया था कि आने वाले सालों में युवाओं को ई-बाइक्स पसंद नहीं आएंगी। लेकिन अब व्यावहारिक सच्चाई बदल चुकी है। आजकल ई-बाइक्स निर्माता दिन-ब-दिन इसके नए और अपडेटेड वर्जंस लांच कर रहे हैं। ऐसे में युवा-वर्ग इसकी ओर खासे आकर्षित हो रहे हैं। आज के युवा ई-बाइक्स को पेट्रोल बाइक्स के बेहतर विकल्प के रूप में देख रहे हैं।

लुक्स-फीचर्स भी हैं अट्रैक्टिवः ई-बाइक्स को फीचर्स के मामले में भी अब अट्रैक्टिव माना जाने लगा है। देखा जाए तो ई-बाइक्स के जितने खूबसूरत, ट्रेंडी और फंकी डिजाइंस पिछले दो सालों में आए हैं, उतने डिजाइंस तो कभी पेट्रोल-बाइक्स में भी नहीं आए। युवाओं द्वारा ई-बाइक्स पसंद किए जाने का एक कारण इनका अल्ट्रामॉडर्न लुक भी है।

बढ़ रही है स्पीडः पहले यह माना जा रहा था कि ई-बाइक्स की रफ्तार बहुत कम होगी, लेकिन ऐसा नहीं है। हालांकि अभी तक इनकी रफ्तार अधिकतम 50 से 55 किलोमीटर प्रति घंटे तक ही है लेकिन उम्मीद है कि इस साल नवंबर-दिसंबर तक 70 से 80 किलोमीटर प्रति घंटा रफ्तार वाली ई-बाइक्स अमेरिका और यूरोप में आ जाएंगी। आने वाले सालों में सौ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार वाली ई-बाइक्स भी सड़कों पर दौड़ने लगेंगी।

लगती हैं कंफर्टेबलः ई-बाइक्स, पेट्रोल-बाइक्स की तुलना में हल्की होती हैं, इसलिए ये युवाओं के साथ-साथ हर आयु-वर्ग के लोगों को पसंद आ रही हैं। छोटे बच्चों और बुजुर्गों को पैडलिंग ई-बाइक्स भी खूब पसंद आ रही हैं। दरअसल, इनमें मोटर और बैटरी दोनों होती हैं, पर अगर दोनों ही काम न कर रहे हों तो पैडल मारने की सुविधा भी होती है। इन खूबियों के साथ पर्यावरण और भविष्य की चिंताओं से सरोकार रखने वाले युवाओं के साथ-साथ हर वर्ग के लोग पेट्रोल-बाइक्स के बेहतर विकल्प के तौर पर ई-बाइक्स को खूब पसंद कर रहे हैं।

और बढ़ेगा ट्रेंडः पिछले कुछ सालों में अमेरिका ई वाहनों का हब बनकर उभरा है। एक अनुमान के मुताबिक साल 2030 तक दुनिया में 10 करोड़ से ज्यादा लोगों के पास ई-बाइक्स होंगी। ई-बाइक्स दुनिया की सबसे ज्यादा बिकने वाले इलेक्ट्रिक वाहन हैं। यहां तक कि बिक्री के मामले में ये इलेक्ट्रिक कारों से भी बहुत आगे हैं। भारत के संदर्भ में अगर भूतल परिवहन मंत्री नितिन गडकरी की भविष्यवाणी पर यकीन करें तो अगले पांच सालों में भारत में सभी तरह के वाहनों में करीब 30 फीसदी से ज्यादा ई-वाहन होंगे। इसलिए अगर आज युवाओं को पेट्रोल फ्री ई-बाइक्स पसंद आ रही हैं तो मानना होगा कि वे भविष्य पर नजर रख रहे हैं। *

मौसमी फल / शिवचरण चौहान

ताजगी दे रसभरा तरबूज

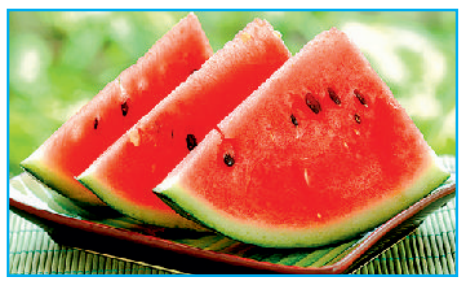

तीरा यानी तरबूज, बेल वाले पौधे में लगने वाला फल है। तरबूज यानी गर्मी में तन को तरावट देने वाला फल। यह गर्मी के मौसम में बालू वाली भूमि पर पैदा होता है। भारत में राजस्थान के अलावा उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, बिहार आदि प्रदेशों में भी यह बहुतायत से उत्पन्न होता है। नदियों की बलुई जमीन में इसकी बेल, आसानी से उग आती है। तरबूज खाने से प्यास शांत होती है और लू नहीं लगती है।

कहां हुई इसकी उत्पत्तिः तरबूज दुनिया में आया कहां से, इसको लेकर बहुत मतभेद हैं। भारत के लोग दावा करते आए हैं कि तरबूज हमारे देश का देशज फल है। दुनिया के लोग अभी तक इसे सूडान का फल मानते रहे हैं। सफेद गूदे वाले तरबूज के फल सूडान के जंगलों में पाए जाते थे, जो जानवरों को खिलाने के काम आते थे और कम मीठे होते थे। ईरान में लाल गूदे वाले तरबूज पाए जाते थे और माना जाता था कि ईरान के रेगिस्तान में तरबूज की उत्पत्ति हुई है लेकिन 3300 वर्ष पूर्व मिस्र के तूती खामीन के मकबरे में तरबूज के बीज मिले थे तो माना गया कि तरबूज की उत्पत्ति मिस्र में हुई होगी। फिर 4300 वर्ष पूर्व की एक पेंटिंग मिस्र के एक गुंबद में मिली, जिसमें एक तश्तरी में कटे हुए तरबूज के लाल रंग की फांके के चित्र बने हुए हैं। इस आधार पर लोग मानने लगे कि मिस्र के लोग लाल गूदे वाले मीठे तरबूज के बारे में बहुत पहले से जानते थे। आज तरबूज पूरी दुनिया में प्यास बुझाने के लिए गर्मियों का एक प्रमुख फल है।

मौजूद प्रमुख तत्वः एक पके तरबूज में 90 प्रतिशत जल, 0.4 प्रतिशत प्रोटीन, 0.3 प्रतिशत वसा, 0.3 प्रतिशत खनिज तत्व, 4 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट और लोहा भी पाया जाता है। तरबूज के बीजों में 52 प्रतिशत तेल, 34 प्रतिशत प्रोटीन और अन्य तत्व होते हैं। बीजों की तासीर शीतल होने के कारण शरबत और लस्सी को बनाने में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

कई रोगों में उपयोगीः तरबूज के बीज की गिरी मूत्र रोग में रामबाण है और मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करती है। नियमित तरबूज खाने से पेट की खराबी में राहत मिलती है। सूखी खांसी के मरीज को लाभ मिलता है और उच्च रक्तचाप को भी नियंत्रित करता है। जोड़ों के दर्द में यह उपयोगी है। यह रक्त वर्धक भी होता है। लेकिन तरबूज अधिक नहीं खाना चाहिए। *

बड़ा पर्दा / हेमंत पाल

शुरुआती दौर से ही अलग-अलग जॉनर में हिंदी फिल्में बनती रही हैं। लेकिन उनमें से जिस जॉनर की फिल्में दर्शक सबसे ज्यादा पसंद करते हैं, उनमें सस्पेंस-थ्रिलर प्रमुख हैं। किस तरह ये फिल्में दर्शकों को अंत तक बांधे रखती हैं, अब तक की सबसे चर्चित सस्पेंस फिल्में कौन-सी रही हैं, इन पर एक नजर।

दर्शकों को भाती हैं खूब क्लाइमेक्स पर चौंकाने वाली फिल्में

फिल्मी पर्दे पर दर्शक अलग-अलग रंग देखते रहे हैं। उन्हीं में से एक रंग है फिल्म के अंत का रोमांच बनाकर रखना। शुरुआती दौर में इन फिल्मों के क्लाइमेक्स को इतना रोचक बनाया जाता था कि दर्शक समझ नहीं पाता कि ऐसा कैसे संभव है? ऐसी फिल्मों का अंत कुछ ऐसा होता था, जो देखने वालों को चौंकाता था। इनके कथानक को कुछ इस तरह रचा जाता था कि दर्शक उसके आकर्षण में फंस जाते थे। वे कहानी के ट्विस्ट की असलियत समझ नहीं पाते और जब राज खुलता तो ऐसा पात्र संदेहों से घिरा मिलता, जिस पर किसी की नजर नहीं जाती थी। सस्पेंस फिल्मों में चौंकाने वाले इस तरह के अंत का दौर अभी खत्म नहीं हुआ है।

नया नहीं थ्रिलर का क्रेजः पुराने दौर से लेकर अब तक कई थ्रिलर फिल्में आती रही हैं, लेकिन सभी दर्शकों को बांधने में सफल नहीं हो पाईं। याद वही फिल्में रहती हैं, जिन्होंने अपनी पटकथा और डायरेक्शन का जादू दिखाया। पुरानी फिल्मों में 'तीसरी मंजिल', 'ज्वेल थीफ', 'इत्तेफाक', 'गुमनाम' और आज के दौर की 'ए वेडनस-डे', 'बदला', 'हमराज', '100 डेज' के बाद आयुष्मान खुराना की फिल्म 'अंधाधुन' और अजय देवगन की दोनों 'दृश्यम' ऐसी ही फिल्में हैं, जिनके क्लाइमेक्स ने दर्शकों को चौंकने पर मजबूर कर दिया था। 'अंधाधुन' ने तो एक नया ट्रेंड बना दिया। इसमें एक अंधे आदमी का किरदार काफी रहस्यमय था। फिल्म की कहानी इसी के आस-पास घूमती है। इस पूरी फिल्म में अच्छा-खासा सस्पेंस बनाकर रखा गया।

विजय आनंद ने की शुरुआतः फिल्म इतिहास के पन्ने पलटे जाएं, तो हिंदी फिल्मों में मर्डर मिस्ट्री और सस्पेंस फिल्मों की शुरुआत का श्रेय विजय आनंद को जाता है। उन्होंने 'तीसरी मंजिल' और 'ज्वेल थीफ' उस दौर में बनाने की हिम्मत की, जब दर्शकों को ऐसी कहानियों का अंदाजा भी नहीं था। पर, विजय आनंद ने दर्शकों पर अपना जादू चलाया और उनकी ऐसी कई फिल्में पसंद की गईं। उन्होंने ऐसे कई प्रयोग किए, जो सस्पेंस से लबरेज थे।

दर्शकों को भाती हैं ऐसी फिल्मेंः सस्पेंस और थ्रिलर हमेशा ही दर्शकों का पसंदीदा फिल्म जॉनर रहा है। उन्हें ऐसी सस्पेंस फिल्में ही ज्यादा पसंद आती हैं, जिसके अंत के बारे में सारे अनुमान गलत निकलें। फिल्म के क्लाइमेक्स में ऐसा शख्स सामने आए, जिसका दर्शकों ने अनुमान भी नहीं लगाया हो! ऐसी ही फिल्में दर्शकों को बांधने वाली होती हैं। इसीलिए दर्शक सस्पेंस, थ्रिलर और मर्डर मिस्ट्री देखना पसंद करते हैं। हालांकि ये तीनों ही अलग-अलग शैलियां हैं। थ्रिलर फिल्मों में एक्शन होता है, लेकिन सस्पेंस नहीं। उनमें सस्पेंस की घटनाएं होती हैं, जिनका राज धीरे-धीरे खुलता रहता है। सस्पेंस फिल्म में न तो रहस्य जरूरी है और न एक्शन। इनमें चौंकाने वाले सीन ज्यादा होते हैं, जो दर्शक को सोचने का मौका भी नहीं देते। मिस्ट्री और सस्पेंस थ्रिलर फिल्में एक जैसी नहीं होती हैं। दोनों का ट्रीटमेंट अलग-अलग होता है। सस्पेंस फिल्मों में राज धीरे-धीरे खुलते हैं पर, मिस्ट्री फिल्मों में सिर्फ एक राज होता है, जिस पर से फिल्म के अंत में पर्दा उठता है। पूरी कहानी अनजान हत्यारे की खोज पर आधारित होती है। संदेह के लिए कई पात्रों को निशाने पर रखा जाता है। कभी फिल्म के नायक, नायिका या सबसे शरीफ पात्र के भी कातिल होने के हालात निर्मित किए जाते हैं। यानी दर्शकों को बांधने और उनका ध्यान बांटने के लिए कई हथकंडे रचे जाते हैं। दर्शकों को भी वही सस्पेंस फिल्में ज्यादा पसंद आती हैं, जो उन्हें चौंका दें। 'तीसरी मंजिल', 'ज्वेल थीफ', 'कत्ल' के बाद 'गुप्त' ऐसी ही रोचक फिल्में थीं, जिसके अंत का अंदाजा अनुमान से अलग था।

ये फिल्में रही हैं चर्चितः रामगोपाल वर्मा की 'कौन' को बॉलीवुड की बेस्ट साइकोलॉजिकल थ्रिलर फिल्म कहा जाता है। यह पूरी फिल्म घर में बंद एक लड़की (उर्मिला मातोंडकर) की कहानी है, जो अजनबी (मनोज बाजपेयी) से बचने की कोशिश में रहती है। लेकिन, फिल्म का क्लाईमेक्स दर्शकों के होश उड़ा देता है। इसी तरह की फिल्म 'फोबिया' भी थी, जिसमें राधिका आप्टे ने काम किया। बॉबी देओल, काजोल और मनीषा कोइराला की 'गुप्त' बेहतरीन सस्पेंस थ्रिलर फिल्म थी। इसमें अंत तक किसी का ध्यान नहीं जाता और खलनायिका काजोल निकलती है। विद्या बालन की 'कहानी' और 'कहानी-2' दोनों ही फिल्में दर्शकों को अंत तक कुर्सी से बांधकर रखती हैं। 'बदला' को भी मर्डर मिस्ट्री फिल्म माना जाता है। इसे अंत तक देखने के बाद ही समझ आता है कि आखिर सच्चाई क्या है?

हाल के वर्षों में आई सस्पेंस फिल्मों में 'दृश्यम' सीरीज सबसे अच्छी मानी जा सकती है। इसमें अपराधी सामने होता है, लेकिन न तो पुलिस उसे पकड़ पाती है और न दर्शकों को समझ आता है कि उसने ये सब किया कैसे होगा?

इन्हें भी किया दर्शकों ने पसंदः यहां ऊपर जिन फिल्मों का जिक्र किया गया उनके अलावा कुछ और फिल्में जैसे- 'मेरा साया', 'धुंध', 'अपराधी कौन', 'कब क्यों और कहां', 'वो कौन थी', 'डिटेक्टिव व्योमकेश बक्शी', 'भूल-भुलैया', 'तलवार' का भी जादू दर्शकों पर जमकर चला। *

मेल फैशन / प्रतिमा अरोड़ा

गर्मी के मौसम में अधिकतर यंगस्टर्स ऐसी ड्रेस पहनना चाहते हैं, जो कंफर्टेबल होने के साथ ट्रेंडी भी हों। यही वजह है कि इन दिनों चिनो शॉर्ट्स यंगस्टर्स को खूब भा रहे हैं। इनकी खासियतों के बारे में आप भी जानिए।

यंगस्टर्स को भा रहे हैं कंफर्टेबल चिनो शॉर्ट्स

गर्मी के मौसम में हम सभी ऐसी ड्रेस पहनना चाहते हैं, जो कंफर्टेबल हो और जिसमें गर्मी का अहसास भी कम हो। ये दोनों खूबियां चिनो शॉर्ट्स में मौजूद होती हैं, इसीलिए यंगस्टर्स इन्हें काफी पसंद करते हैं। चिनो शॉर्ट्स, शुद्ध सूती कपड़े के बने होते हैं। यानी इनका फैब्रिक, कपास (कॉटन) से बना होता है। इसलिए गर्मी के मौसम में पहनने के लिए चिनो शॉर्ट्स परफेक्ट माने जाते हैं।

वैरायटीज हैं बहुतः वैसे तो चिनो शॉर्ट्स में आपको कलर्स और डिजाइन की बहुत वैरायटीज मिल जाएंगी लेकिन इस साल खाकी चिनो शॉर्ट्स ट्रेंड में हैं। वैसे आप अपनी पसंद के किसी दूसरे कलर का चिनो शॉर्ट्स भी ले सकते हैं। वैरायटी की लंबी रेंज की वजह से ही यंगस्टर्स ही नहीं हर एज ग्रुप के लोग इसे पहन सकते हैं। देश-विदेश में कई ब्रांडेड कंपनियां चिनो शॉर्ट्स बनाती हैं। इसकी वजह यह है कि पूरी दुनिया में इन दिनों युवाओं के बीच सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले शॉर्ट्स, चिनो शॉर्ट्स ही हैं।

ऐसे करें टीमअपः यह कहना गलत नहीं होगा कि चिनो शॉर्ट्स पिछले कुछ समय से युवाओं की ग्लोबल फेवरेट बॉटम वियर बन गए हैं। इन्हें टैक्सीडो जैकेट और फ्लिप-फ्लॉप डेक शूज के साथ या फिर लूज टी-शर्ट या स्निकर के साथ टीमअप किया जा सकता है।

नॉर्मल शॉर्ट्स से हैं अलगः चिनो शॉर्ट्स के फैब्रिक और डिजाइन के कारण ये नॉर्मल-ट्रेडिशनल शॉर्ट्स से अलग होते हैं। वैसे तो नॉर्मल शॉर्ट्स की तरह चिनो शॉर्ट्स भी थिन कॉटन टवील फैब्रिक से बने होते हैं। लेकिन थोड़ी इलास्टिसिटी के लिए इनमें तीन से पांच फीसदी तक नॉनकॉटन मैटीरियल भी मिलाया जाता है।

होते हैं कंफर्टेबलः चिनो शॉर्ट्स कई देशों समेत अपने देश में भी इसलिए तेजी से पॉपुलर हो रहे हैं, क्योंकि गर्मियों में हमारी त्वचा को जब चिपचिपाहट और उसम के कारण अनकंफर्टेबल फील होता है, तब चिनो शॉर्ट्स वियर करना बहुत कंफर्टेबल लगता है। चिनो शॉर्ट्स का लाइट और सॉफ्ट फैब्रिक न सिर्फ घर में फुर्सत के समय बल्कि सफर के दौरान भी पहनना आरामदायक होता है। चिनो शॉर्ट्स पहनने में जो बात सबसे अच्छी महसूस होती है, वह होती है फ्री बॉडी मूवमेंट। इसे पहनकर आप आराम से किसी भी दिशा में झुक सकते हैं, मूव कर सकते हैं। ये

बिल्कुल शरीर की गतिविधियों के मुताबिक अपने आप एडजस्ट हो जाते हैं। इसलिए इन्हें पहनने में सुविधा महसूस होती है। चिनो शॉर्ट्स का डिजाइन भी अट्रैक्टिव होता है। इसलिए इसे पहनकर स्मार्ट फीलिंग भी आती है।

जब सेलेक्ट करें शॉर्ट्सः इन दिनों गर्मी का मौसम है। इस दौरान अगर आप चिनो शॉर्ट्स पहनना चाहते हैं तो इन्हें खरीदते समय इस बात का ध्यान रखें कि वे कॉटन फैब्रिक के ही बने हों। एक और बात ध्यान रखनी चाहिए कि शॉर्ट्स बहुत लूज या बहुत हैवी नहीं होने चाहिए। पहनने में आपको कंफर्टेबल फील होना चाहिए। अगर घूमने, फिरने के दौरान शॉर्ट्स पहनना चाहते हैं तो ध्यान रखें ये थिन, लूज और कैजुअल बीच शॉर्ट्स होने चाहिए। वैसे चिनो शॉर्ट्स ज्यादातर गर्मियों में पहने जाते हैं, लेकिन 12 से 30 सेंटीमीटर लंबे ये शॉर्ट्स किसी भी अन्य मौसम में भी पहने जा सकते हैं। *